



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 345]

नई दिल्ली, बुधवार अक्टूबर 24, 2018/कार्तिक 2, 1940

No. 345]

NEW DELHI, WEDNESDAY, OCTOBER 24, 2018/KARTIKA 2, 1940

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(व्यापार उपचार महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली 24 अक्टूबर, 2018

अंतिम जांच परिणाम

(मामला सं.[एसी] 02/2018)

विषय: चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "ओ-एसिड" के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की तथाकथित प्रवंचना के संबंध में प्रवंचनाराधी जांच।

सं. 7/14/2018-डीजीएडी.— समय-समय पर यथा संशोधित सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 (इसके पश्चात भी अधिनियम के रूप में कहा गया है) और उसकी समय समय पर यथा संशोधित इसकी सीमा प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क की पहचान, आकलन और संकलन तथा क्षति के निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995 (इसके पश्चात भी नियमावली भी कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए:

क. मामले की पृष्ठभूमि

- जबकि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मैसर्स आरती ड्रग्स लि. के अनुरोध पर विचाराधीन उत्पाद (पीयूसी) ऑफ्लोक्सासिन एसिड (ओ-एसिड) के आयातों पर पाटनरोधी जांच की और 23 मई, 2017 की अधिसूचना संख्या 14/31/2016-डीजीएडी द्वारा अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की, जो कि वित्त मंत्रालय द्वारा 13 जुलाई, 2017 की सीमा शुल्क अधिसूचना संख्या 35/2017-सीमा शुल्क (एडीडी) द्वारा लगाया गया था। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने 19 दिसम्बर, 2017 की अधिसूचना संख्या 14/31/2016-डीजीएडी द्वारा निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की। इन सिफारिशों के आधार पर वित्त मंत्रालय ने अनंतिम शुल्क की तारीख से तीन वर्षों की अवधि के लिए 12 मार्च, 2018 की अधिसूचना संख्या 06/2018-सीमा शुल्क (एडीडी) द्वारा विचाराधीन उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क लगाया।

2. जबकि ओ-एसिड के उत्पादन के लिए अनंतिम स्तर पर होने का दावा किए गए ऑफ्लोक्सोसिन-इस्टर (ओ-इस्टर) के आयातों के संबंध में सतत प्रवंचनारोधी जांच में मैसर्स आरती ड्रग्स लि. (जिसे यहां आगे "याचिकाकर्ता" अथवा "आवेदक" कहा गया है) नेचीन जन. गण. (जिसे यहां आगे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "ऑफ्लोक्सोसिन एसिड"(जिसे यहां आगे "ओ-एसिड" अथवा "विचाराधीन उत्पाद" अथवा "पीयूसी" कहा गया है) के अनंतिम चरण ओ-इस्टर (जिसे यहां आगे "जांचाधीन उत्पाद" अथवा "पीयूआई" भी कहा गया है) के आयातों के संबंध में प्रवंचनारोधी जांच शुरू करने के लिए नियम 26(1) सीमा प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क की पहचान, आकलन और संकलन तथा क्षति के निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995 (पाटनरोधी नियमावली) के साथ पठित धारा 9क के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे यहां आगे प्राधिकारी भी कहा गया है) के समक्ष एक आवेदन पत्र दायर किया। याचिकाकर्ता ने संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद के अनंतिम चरण के उत्पाद, जांचाधीन उत्पाद के ओ-एसिड के आयातों पर मौजूदा पाटनरोधी शुल्क बढ़ाने के लिए अनुरोध किया।
3. जबकि नियम 26(1) के तहत याचिकाकर्ता द्वारा दायर विधिवत पूर्ण आवेदन पत्र के मद्देनजर, प्राधिकारी ने लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की तथाकथित प्रवंचना की मौजूदगी और प्रभाव निर्धारित करने के लिए तथा ओ-एसिड के ओ-इस्टर के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क बढ़ाने के लिए सिफारिश करने के लिए 4 मई, 2018 की अधिसूचना संख्या 7/14/2018-डीजीएडी द्वारा जांच शुरू की।

ख. प्रक्रिया

4. जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है:
 - i. प्राधिकारी ने प्रवंचनारोधी जांच शुरू करते हुए 4 मई, 2018 की अधिसूचना संख्या 7/14/2018-डीजीएडी द्वारा अधिसूचना जारी की जो भारत के राजपत्र में प्रकाशित की गई थी।
 - ii. प्राधिकारी ने भारत में चीन के दूतावास, चीन के ज्ञात जांचाधीन उत्पाद के निर्यातकों और भारत में ज्ञात जांचाधीन आयातकों को याचिका में उपलब्ध सूचना के अनुसार जांच की शुरुआत की अधिसूचना की प्रति भेजी।
 - iii. प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद/जांचाधीन उत्पाद के निर्यातकों/उत्पादकों को लिखा और उनसे अनुरोध किया कि वे निर्धारित प्रश्नावली में अपने उत्तर दायर करें और निर्धारित समय-समय के भीतर लिखित में अपने ज्ञात विचार दें। निर्यातकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावलियों की प्रतियां ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची के साथ चीन के दूतावास को भी भेजी गई थी जिसमें उनसे अनुरोध किया गया था कि वे चीन के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्राधिकारी को उत्तर देने की सलाह दें।
 - iv. याचिकाकर्ता द्वारा दायर आवेदन पत्र के अगोपनीय रूपांतर की प्रति चीनी उत्पादक/निर्यातकों तथा चीन सरकार को भेजी गई थी। आवेदन पत्र के अगोपनीय रूपांतर की प्रति सार्वजनिक फाइल के माध्यम से अनुरोध किए जाने पर हितबद्ध पक्षकारों को भी उपलब्ध कराई गई थी।
 - v. प्राधिकारी ने चीन निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को प्रवंचनारोधी जांच शुरू करने की सार्वजनिक सूचना की प्रति भेजी और उन्हें पाटनरोधी नियमावली के अनुसार पत्र की तारीख से 40 दिन के भीतर लिखित में अपने ज्ञात विचार देने का अवसर दिया।
 - क. झेजियांग उइजी बिजनेस सर्विस कं. लि.
 - ख. मर्सी ग्रुप कं. लि.
 - ग. झेजियांग केमिकल्स इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कारपो.
 - घ. झेजियांग मेडिसिन्स एंड हेल्थ प्रोडक्ट्स इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं. लि.
 - ङ. अपेलोआ कंग्यु बिजनेस ऑफिस
 - च. झेजियांग जिंक्सिन फार्मास्युटिकल कं. लि.
 - छ. झेजियांग ईस्ट फार्मास्युटिकल लि.
 - ज. योंगिंग फार्मा
 - झ. जियांगसु गोटेई इंटरनेशनल ग्रुप हुआटई इम्पोर्ट एंड एक्सपो. कं. लि.

- ज. चाइना सिनोफार्म इंटरनेशनल कारपोरेशन
 ट. झेजियांग हेंगदियान अपेलोआ इम्पोर्ट, एंड एक्सपोर्ट, कं. लि.
 ठ. जैक्सी चिबांग फार्मास्युटिकल कं. लि.
 ड. जियांक्सी डाडी फार्मास्युटिकल लिमिटेड लिएबिलिटी कं.
 ढ. झेजियांग जिंगुआंग इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं. लि.
 ण. यानचेंग जिनानझोऊ फार्मास्युटिकल कं. लि.
 त. इनर मंगोलिया युआनहांग फान केमिकल कं. लि.
 थ. झेजियांग युआनहांग मेडिकल एंड केमिकल टैक्नोलॉजी कं. लि.
- vi. चीन से विचाराधीन उत्पाद/जांचाधीन उत्पाद के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया और न ही किसी उत्पादक/निर्यातक ने निर्धारित प्रपत्र तथा तरीके से प्रश्नावली का उत्तर दायर किया।
- vii. तथापि, निम्नलिखित निर्यातक द्वारा एक प्राधिकार पत्र दायर किया गया था:
- क. झेजियांग उइजी बिजनेस सर्विस कं. लि.
- viii. नियमावली के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए भारत में संबद्ध सामानों के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं:
- क. इनफिनिटी लैबोरेट्रीज प्राइवेट लिमिटेड
 ख. भारत केमिकल्स
 ग. दानोफार्म केमिकल्स प्रा. लि.
 घ. विटल लैबोरेट्रीज प्रा. लि.
 ड. मैसर्स सिपला लिमिटेड
 च. मैसर्स मेकलोड्स फार्मास्युटिकल्स लि.
 छ. मैसर्स जे. बी. केमिकल्स एंड फार्मास्युटिकल लि.
 ज. मैसर्स अरिस्टो फार्मास्युटिकल प्रा. लि.
 झ. मैसर्स सन फार्मास्युटिकल इंड. लिमिटेड
 ञ. मैसर्स मेडि फार्मा ड्रग हाउस
 ट. मैसर्स एफडीसी लि.
 ठ. मैसर्स मेडली फार्मास्युटिकल्स लि.
 ड. मैसर्स काडिला हेल्थकेयर लि.
 ढ. मैसर्स मर्क (इंडिया) लि.
 ण. मैसर्स एलकेम लैबोरेट्रीज लि.
- ix. संबद्ध जांच की शुरुआत के उत्तर में केवल जांचाधीन उत्पाद के आयातक मैसर्स इनफिनिटी लैबोरेट्रीज प्रा. लि. ने उत्तर दिया और प्रश्नावली का उत्तर दायर किया।
- x. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार, प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को 24 अगस्त, 2018 को हुई सार्वजनिक सुनवाई में मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। 24 अगस्त, 2018 को हुई सुनवाई में घरेलू उद्योग द्वारा और जांचाधीन उत्पाद के एक उत्तरदाता आयातक द्वारा भाग लिया गया था। मौखिक सुनवाई में जिन पक्षकारों ने अपने विचार प्रस्तुत किए, उनसे अनुरोध किया गया था कि वे मौखिक रूप में व्यक्त अपने विचारों को लिखित अनुरोध के रूप में दायर करें।

- xi. जिन निर्यातकों, आयातकों, अन्य घरेलू उत्पादकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया और न ही इस जांच से संबंधित सूचना दी, उन्हें असहयोगी माना गया है।
- xii. अप्रैल, 2014 – मार्च, 2015, अप्रैल, 2015 – मार्च, 2016, अप्रैल, 2016 – मार्च, 2017, जांच की अवधि जुलाई, 2017 – मार्च, 2018 तथा 2018-19 की पहली तिमाही के लिए संबद्ध सामानों के आयातों के ब्यौरे डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त किए गए थे।
- xiii. इस जांच के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों पर जहां भी वे संगत पाए गए हैं, इस जांच परिणाम में विचार किया गया है।
- xiv. याचिकाकर्ता द्वारा उनके परिसरों में प्रस्तुत सूचना और आंकड़ों के संबंध में आवश्यक समझी गई सीमा तक सत्यापन किया गया था। प्राधिकारी ने सहयोगी आयातक के विनिर्माण संयंत्र का अलग से सत्यापन भी किया।
- xv. गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना की जांच उनके गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने, जहां भी आवश्यक हुआ, गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और इस प्रकार की सूचना को गोपनीय माना गया है और उसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं बताया गया है। जहां भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकारों को निर्देश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर दी गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय भाग उपलब्ध करायें।
- xvi. जहां कहीं भी किसी हितबद्ध पक्षकार ने प्राधिकारी को वर्तमान जांच के दौरान उत्तर नहीं दिया है अथवा अन्यथा आवश्यक सूचना उपलब्ध नहीं कराई है या जांच में काफी बाधा डाली है, वहां प्राधिकारी ने उन पक्षकारों को असहयोगी माना है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर जांच परिणाम रिकार्ड किए।
- xvii. उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार, प्राधिकारी द्वारा संबंधित हितबद्ध पक्षकारों को 25 सितम्बर, 2018 को अनिवार्य तथ्य प्रकट किए गए थे। टिप्पणियां 3 अक्तूबर, 2018 तक देने का अनुरोध किया गया था। प्राधिकारी द्वारा संगत मानी गई सीमा तक प्रकटन विवरण के संबंध में प्राप्त टिप्पणियों पर इस अंतिम जांच परिणाम में विचार किया गया है।
- xviii. *** का अभिप्राय गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकार/किसी अन्य पक्षकार द्वारा दी गई और प्राधिकारी द्वारा मानी गई सूचना से है।
- xix. जांच की अवधि के दौरान विद्यमान **1 अमेरिकी डॉलर = 65.29 रुपये** की औसत विनिमय दर को प्राधिकारी द्वारा इस जांच परिणाम में अपनाया गया है।

ग. जांचाधीन उत्पाद और समान वस्तु

ग.1 निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

5. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- i. ऑफ्लोक्सासिन इस्टर, सीएस नम्बर, रासायनिक नाम, रासायनिक सम्मिश्रण, भार और फॉर्मूला की दृष्टि से ओ-एसिड से पूर्णतः भिन्न है।
- ii. ऑफ्लोक्सासिन इस्टर (जांचाधीन उत्पाद) और ओ-एसिड (विचाराधीन उत्पाद), दोनों भिन्न सम्मिश्रण अथवा रसायन हैं जिनके भिन्न भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्म/सम्मिश्रण हैं, वस्तुतः ऑर्गेनिक कम्पाउंड और ओ-एसिड में कार्बोऑफ्लोक्सासिन इस्टर के रूप में भिन्न श्रेणी के उत्पाद कार्बोक्सिलेट इस्टर, ऑर्गेनिक सम्मिश्रणों में कार्बोक्सिलिक एसिड समूह से संबंधित है। दोनों के भिन्न-भिन्न मॉल्युलर फॉर्मूला और मॉल्युलर भार हैं। यहां तक कि ऑफ्लोक्सासिन इस्टर कास्टिक घोल में घुलनशील नहीं है जबकि ओ-एसिड उसमें स्वतंत्र रूप से घुलनशील है।

ग.2 घरेलू उद्योग के विचार

6. घरेलू उद्योग ने जांचाधीन उत्पाद के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- i. प्रवचना की वस्तु बनने वाला उत्पाद "ऑफ्लोक्सासिन इस्टर-(ओ-इस्टर)" है।
- ii. इस मामले में जांचाधीन उत्पाद कोई और नहीं है बल्कि मूल जांच में विचाराधीन उत्पाद का अनंतिम चरण/स्वरूप है तथा विचाराधीन उत्पाद में परिवर्तन के लिए 3-4 प्रतिशत तक के न्यूनतम मूल्य वर्धन की आवश्यकता होती है।

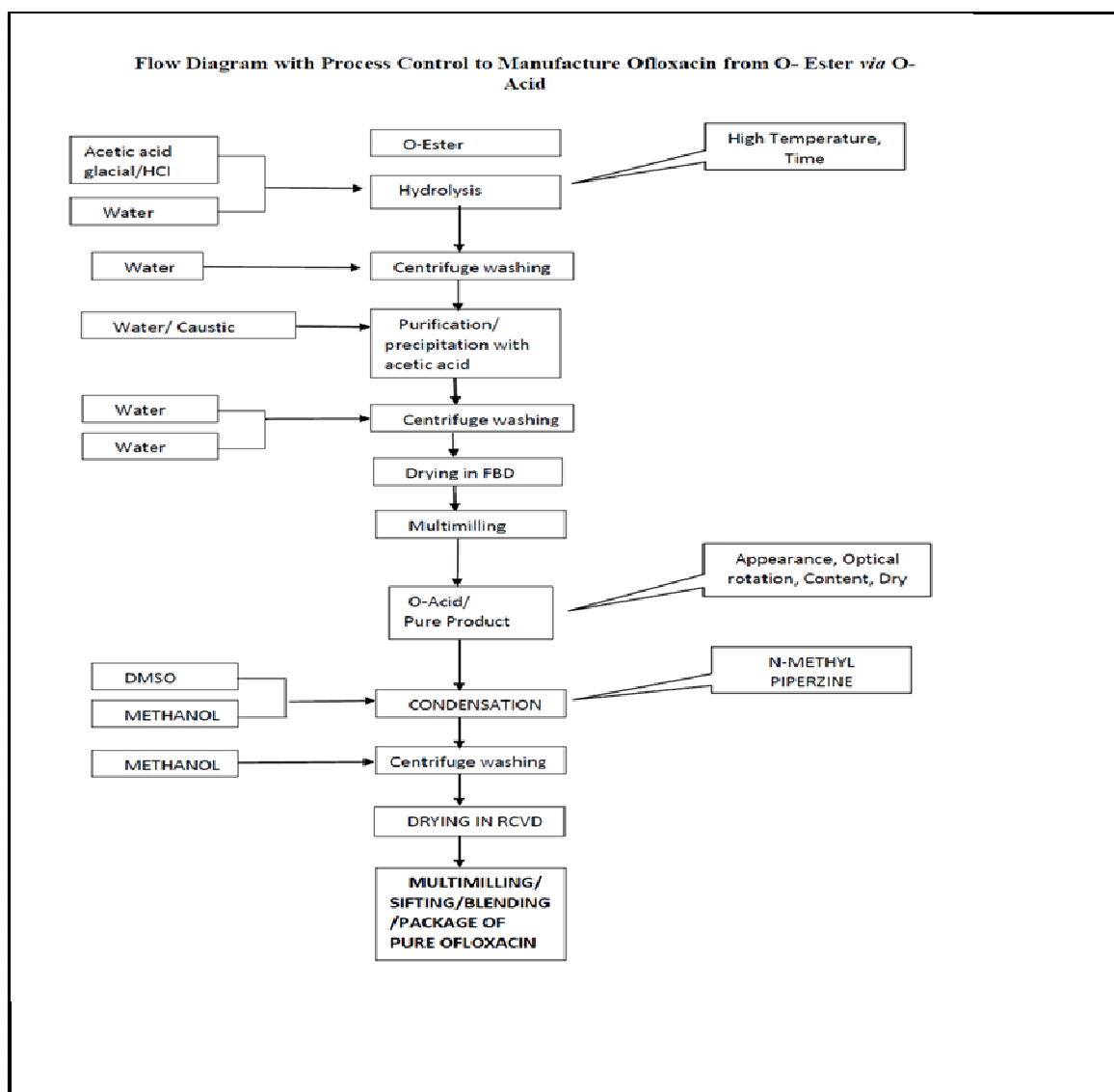
- iii. जहां तक मूल्य वर्धन के दावे का संबंध है, मूल्य वर्धन उस उत्पाद के लिए देखा जाना होता है जिनके शुल्कों की प्रवंचना हो रही है न कि किसी ऐसे अन्य उत्पाद के लिए जो प्रवंचना वाले उत्पाद से बन सके। मूल्य वर्धन को ओ-इस्टर के ओ-एसिड में परिवर्तन पर देखे जाने की आवश्यकता है न कि ओ-इस्टर के ऑफ्लोक्सासिन एपीआई में परिवर्तन पर।
- iv. ओ-इस्टर के रूप में होते हुए भी ओ-एसिड के आयातों के माध्यम से शुल्क की प्रवंचना की जा रही है जिससे लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के उपचारात्मक प्रभाव कम हो रहे हैं। वर्तमान जांच का जांचाधीन उत्पाद और मूल जांच का विचाराधीन उत्पाद उसी परिवार से संबंधित हैं।
- v. संबद्ध सामान उप-शीर्ष 29349900 के तहत सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत हैं। सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और जांच के क्षेत्र पर किसी भी तरह बाध्यकारी नहीं है।
- vi. ओ-इस्टर से ओ-एसिड का उत्पादन करने की उत्पादन प्रक्रिया में एसिड वाले पानी में हाइड्रोलिसिस की प्रक्रिया तथा ओ-इस्टर को ओ-एसिड में बदलने की लागत शामिल होती है अर्थात् भारत में ओ-इस्टर से ओ-एसिड के चरण तक मूल्य वर्धन संगत प्रवंचना संबंधी प्रावधानों के तहत निर्धारित सीमाओं से काफी कम है।

ग.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

7. पाटनरोधी शुल्क लगाने वाला विचाराधीन उत्पाद ओ-एसिड है। जांचाधीन उत्पाद "ऑफ्लोक्सासिन इस्टर (ओ-इस्टर)" (जिसे आगे "जांचाधीन उत्पाद" अथवा "पीयूआई" अथवा "संबद्ध सामान" भी कहा गया है) है जिसे "ऑफ्लोक्सासिन एसिड (ओ-एसिड)" (जिसे यहां आगे संबद्ध उत्पाद अथवा "विचाराधीन उत्पाद" अथवा "पीयूसी" भी कहा गया है) के उत्पादन में अंतिम चरण होने का दावा किया गया है। विचाराधीन उत्पाद की जांच की गई और प्राधिकारी द्वारा निम्नलिखित रूप में मूल जांच में रिकार्ड किया गया।

"वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद ओ-एसिड तथा ऑफ्लोक्सासिन एसिड है। यह एक ऑफ व्हाइट से व्हाइट क्रिस्टलीन चूर्ण है और इसका प्रयोग ऑफ्लोक्सासिन के विनिर्माण के लिए मध्यवर्ती के रूप में किया जाता है जो कि एक दूसरी पीढ़ी का फ्लोरोक्वोलोन मानी जाने वाले फ्लोरोक्वोलोन ड्रग की श्रेणी का एक सिंथेटिक कीमोथैरापेटिक एंटीबायोटिक है। ऑफ्लोक्सासिन एक रेसिमिक मिश्रण है जिसमें 50 प्रतिशत लेवोफ्लोक्सासिन (जीव वैज्ञानिक रूप से सक्रिय घटक) और उसका 50 प्रतिशत "मिरर इमेज" अथवा इनेनटिमेर डेट्रोफ्लोक्सासिन है।"

8. इस तर्क के संबंध में कि ओ-इस्टर, ओ-एसिड से भिन्न उत्पाद है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच एक प्रवंचना जांच है अर्थात् पहले से लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की तथाकथित प्रवंचना की जांच है। ऐसे मामलों में प्रवंचित उत्पाद अथवा जांचाधीन उत्पाद को विचाराधीन उत्पाद की समान वस्तु होने की आवश्यकता नहीं है। यह वास्तव में विचाराधीन उत्पाद "भाग अथवा संघटक" हो सकते हैं अथवा इस मामले में एक रसायन हो सकता है जो विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन के लिए प्राथमिक है।
9. ऑफ्लोक्सासिन की उत्पादन प्रक्रिया की जांच घरेलू उद्योग तथा उत्तरदाता आयातक, दोनों के परिसरों में की गई थी। यह प्रक्रिया निम्नलिखित फ्लो चार्ट में वर्णित है। यह नोट किया जाता है कि ओ-इस्टर से ओ-एसिड के चरण की प्रक्रिया एक वृद्धिकारक प्रक्रिया है, यह वह चरण है जो ऑफ्लोक्सासिन के उत्पादन के अंतिम चरण के पहले का चरण है। यह देखा जाता है कि ओ-इस्टर को एसिड के पानी में हाइड्रोलाइज किया जाता है, जिसे फिर ठंडा किया जाता है और ओ-एसिड के सूखे केक बनाने के लिए छाना जाता है जिन्हें फिर आगे ऑफ्लोक्सासिन प्राप्त करने के लिए प्रसंस्कृत किया जाता है।



10. जांचाधीन उत्पाद को "ऑफ्लोक्सासिन इस्ट" अथवा "9, 10 – डाइफ्लोरो – 3 – मिथाइल – 7 – ऑक्सो – 2, 3 – डिहाइड्रो – 7एच – पाइरिडो (1, 2, 3 – डी) 1, 4 – बेंजोक्साजीन – 6 – कार्बोक्सिलिक इस्टर" के रूप में वर्णित है और यह सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 29 तथा उप-शीर्ष 29349900 के तहत वर्गीकृत है। सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और जांच के क्षेत्र पर किसी भी तरह बाध्यकारी नहीं है।

घ. घरेलू उद्योग का क्षेत्र एवं आधार

घ.1 निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

11. घरेलू उद्योग के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार निम्नलिखित हैं:

- i. आरती ड्रग्स लि. ऑफ्लोक्सासिन के विनिर्माण के लिए संबद्ध सामानों का उत्पादन कर रहा है बल्कि घरेलू बाजार में बिक्री के लिए। आरती ड्रग्स लि. ने अपने ऑफ्लोक्सासिन संयंत्र की आवश्यकता को पूरा करने के लिए ओ-एसिड के लिए संस्थापित क्षमता का निर्माण किया है और इस प्रकार पाटनरोधी नियमावली के अनुसार घरेलू उद्योग नहीं हो सकता।

घ.2 घरेलू उद्योग के विचार

12. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- i. यह याचिका मैसर्स आरती ड्रग्स लि. द्वारा दायर की गई है। याचिकाकर्ता कंपनी देश में विचाराधीन उत्पाद का एक मात्र उत्पादक है।
- ii. याचिकाकर्ता कंपनी ने न तो जांच की अवधि में आयात किया है और न ही संबद्ध देशों में संबद्ध सामानों के किसी निर्यातक अथवा उत्पादक अथवा भारत में आयातकों से संबंधित है। तथापि, याचिकाकर्ता ने क्षति जांच में विचाराधीन उत्पाद का आयात किया क्योंकि विचाराधीन उत्पाद की पहुँच कीमत उत्पादन लागत से काफी कम थी और यह संभव नहीं था कि वह पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण उसका उत्पादन कर सकें। अन्तिम शुल्क लगाए जाने से और फिर विचाराधीन उत्पाद के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से याचिकाकर्ता ने देश में विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं किया है।
- iii. याचिकाकर्ता भारत में संबद्ध सामानों का एक मात्र उत्पादक है और पाटनरोधी नियमावली के अभिप्राय से "घरेलू उद्योग" है।
- iv. याचिकाकर्ता ने ऑफ्लोक्सासिन के लिए काफी क्षमता स्थापित की है। इस प्रकार, याचिकाकर्ता का इरादा स्पष्ट रूप से व्यापारिक बाजार में भी है। याचिकाकर्ता ने अनिच्छा न होने के कारण घरेलू बाजार में सामानों की बिक्री नहीं की बल्कि मजबूरी के कारण की। पूर्व में ओ-एसिड के और अब ओ-इस्टर के कम कीमत पर आयातों की उपलब्धता से उत्पादक के लिए सामान बेचना कठिन हो गया है।

घ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

13. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रवंचनारोधी जांच के लिए तथा ओ-एसिड के आयात ओ-इस्टर के आयातों में करने पर मौजूदा पाटनरोधी शुल्क बढ़ाने की याचिका निम्नलिखित रूप में पठित नियम 26(1) के अनुसार मैसर्स आरती ड्रग्स लि. द्वारा दायर की गई है

"(1) जैसा कि यहां नीचे दिया गया है, को छोड़कर, निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग द्वारा या उसकी ओर से कोई लिखित आवेदन पत्र प्राप्त होने पर अधिनियम की धारा 9क के तहत लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की तथाकथित प्रवंचना की मौजूदगी और उसका प्रभाव निर्धारित करने के लिए जांच शुरू कर सकते हैं।"
14. मैसर्स आरती ड्रग्स लि. को मूल जांच में नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग माना गया था जिसके आधार पर विचाराधीन उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की गई है और फिर 12 मार्च, 2018 को अधिसूचित किए जाने पर लगाई गई है। पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग निम्नलिखित रूप में परिभाषित है:

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा ऐसे उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है सिवाए उस स्थिति के जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं, तो ऐसे मामले में "घरेलू उद्योग" पद का अर्थ शेष उत्पादकों के संदर्भ में लगाया जा सकता है।
15. याचिकाकर्ता चीन में ओ-इस्टर अथवा ओ-एसिड के किसी आयातक अथवा भारत में किसी आयातक से संबंधित (प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से) नहीं है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने जांच की अवधि के दौरान चीन से विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं किया है।
16. यह विवाद नहीं है कि याचिकाकर्ता के उत्पादन का भारतीय उत्पादन में भारी अनुपात नहीं है। तथापि, आयातक ने इस आधार पर नियम 2(ख) के अभिप्राय से घरेलू उद्योग के स्तर का दावा करने के लिए याचिकाकर्ता की पात्रता पर विवाद किया है कि याचिकाकर्ता एक कैप्टिव उत्पादक है। प्राधिकारी ने मूल जांच में इस पहलू पर विचार किया और निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला:

हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि आवेदक ने कैप्टिव खपत के लिए ही सुविधाएं स्थापित की हैं और प्राधिकारी ने विगत में माना है कि कैप्टिव खपत नियम 5 के तहत घरेलू उद्योग के आधार का निर्धारण करने के लिए माने जाने हेतु अपेक्षित नहीं है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि (क) ऑफ्लोक्सासिन एसिड के लिए कंपनी द्वारा सृजित क्षमताएं उसकी अपनी आवश्यकता से कहीं अधिक हैं, (ख) ये क्षमताएं भारतीय बाजार में उत्पाद के लिए मांग के लिए पूर्णतः काफी तुलनीय हैं, (ग) आवेदक ने यह उल्लेख किया है कि उत्पादन शुरू करने के बाद उन्होंने ई-मेल पत्राचार और केमिकल वीकली में सार्वजनिक विज्ञापनों के माध्यम से बिक्री के लिए उत्पाद की पेशकश की जिससे यह सिद्ध किया जा सकता है कि घरेलू उद्योग ने कैप्टिव तथा व्यापारिक बिक्री के लिए संयंत्र स्थापित किया था। वर्तमान जांच एक

ऐसा मामला है जहां प्राधिकारी यह जांच कर रहे हैं कि क्या उत्पाद के पाटन से वर्तमान क्षमताओं को क्षति होने के लिए वृद्धि में देश में घरेलू उद्योग की वास्तविक रूप में स्थापना में कमी आ रही है। इसके मद्देनजर, प्राधिकारी मानते हैं कि जांच की अवधि तक वास्तविक व्यापारिक बिक्री के अभाव के तथ्य से नियम 2(ख) के तहत कंपनी को घरेलू उद्योग के रूप में माने जाने से वंचित नहीं किया जाना चाहिए।

17. प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियम 26(1) में पहले से लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा प्रवंचनारोधी याचिका दायर किए जाने की अपेक्षा है। इस जांच में मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के घरेलू उद्योग में ऊपर बताए गए अनुसार मैसर्स आरती ड्रग्स लि. है। याचिकाकर्ता अब भी ओ-इस्टर के आयातों द्वारा बदले जा रहे ओ-एसिड के आयातों के मद्देनजर व्यापारिक बाजार में सामान बेचने में समर्थ नहीं है। इसके मद्देनजर, प्राधिकारी का यह मत है कि याचिकाकर्ता का आधार और नियम 26(1) के तहत अपेक्षित विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उद्योग के रूप में उसकी पात्रता से समझौता नहीं किया जाता है।

ड. प्रवंचना के साक्ष्य

ड.1 निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध

18. प्रवंचना के साक्ष्य के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध निम्नलिखित हैं:
- ओ-इस्टर से ऑफ्लोक्सासिन के विनिर्माण की प्रक्रिया में ओ-एसिड का उत्पादन नहीं लिया जाता/सूचित किया जाता है तथा इनफिनिटी लैब ओ-एसिड के उत्पादन के लिए हिसाब नहीं रखता। इनफिनिटी वाणिज्यिक बिक्री के लिए ओ-एसिड का उत्पादन नहीं करता। ओ-इस्टर से ऑफ्लोक्सासिन का उत्पादन करने के लिए मूल्य वर्धन 35 प्रतिशत से अधिक है।
 - मॉलक्युलर भार में लगभग 10 प्रतिशत का अंतर है, तथापि, विनिर्माण के बाद उत्पादन अंतर के कारण लगभग 17-18 प्रतिशत मूल्य वर्धन किया जाता है। सभी खर्चों को जोड़ने के बाद मूल्य वर्धन लगभग 30-35 प्रतिशत तक चला जाता है। इसके अतिरिक्त, ओ-इस्टर, ओ-एसिड में अशुद्धता है और यह ओ-एसिड में नहीं होना चाहिए अथवा अधिकतम 0.5 प्रतिशत तक सीमित होना चाहिए जिससे यह पुष्ट हो सके कि यह पिछला एकीकरण है न कि प्रवंचना।
 - चीनी आपूर्तिकर्ताओं द्वारा आपूर्ति किए गए ओ-इस्टर बनाम ओ-एसिड के उत्पादन की कीमतों का अंतर केवल 10-15 प्रतिशत है, तथापि, वास्तविक विनिर्माण अंतर 30-35 प्रतिशत से अधिक है।
 - यहां तक कि 35 प्रतिशत मूल्य वर्धन की बात यहां रासायनिक अभिक्रियाओं में लागू नहीं है। चूंकि, अभिक्रियाएं एक सम्मिश्रण से दूसरे विनिर्माण सम्मिश्रण पर निर्भर करती हैं और कुछ मामलों में जब सघनता अभिक्रिया में दो सम्मिश्रण साथ-साथ मिलते हैं तो परिणामी सम्मिश्रण भारी मूल्य वर्धन दर्शाता है जबकि यदि अभिक्रिया परिणामी सम्मिश्रण के मॉलक्युलर भार के बजाए हाइड्रोलिसिस अथवा हाइड्रोजेनरेशन अथवा कमी अथवा ऑक्सीडेशन लगभग समान है और यहां तक कि यदि परिणामी सम्मिश्रण विभिन्न श्रेणी तथा विभिन्न रासायनिक और भौतिक गुणधर्मों में पूर्णतः भिन्न हैं तो बहुत अधिक मूल्य वर्धन होता है।

ड.2 घरेलू उद्योग द्वारा अनुरोध

19. प्रवंचना के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:
- मध्यवर्ती ओ-इस्टर का निर्यात ओ-एसिड पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद शुरू हुआ और बढ़ा तथा वह गहन हो गया है।
 - पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण चीन के उत्पादकों ने एक अंतिम से पूर्व के मध्यवर्ती उत्पाद ओ-इस्टर का निर्यात करना और उसे भारत में पाटित करना लाभप्रद पाया।
 - व्यापार के पैटर्न में परिवर्तन है। संबद्ध देश से आयातों की मात्रा ओ-एसिड से ओ-इस्टर में चली गई है। जबकि ओ-इस्टर के आयात काफी बढ़े हैं, ओ-एसिड के आयात में गिरावट आई है और अब मौजूद नहीं है।
 - अनंतिम शुल्क लगाए जाने के बाद ओ-इस्टर के आयातों में काफी वृद्धि इस तर्क का समर्थन करती है कि पूर्व में डीएफएस पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की प्रवंचना करने के लिए चीन से ओ-इस्टर का निर्यात किया जा रहा है।
 - उत्पाद के रासायनिक और भौतिक स्वरूप में परिवर्तन हैं, किसी भी तरह से कोई प्रवंचना नहीं है एवं इसकी बजाए ऑफ्लोक्सासिन के विनिर्माण की प्रक्रिया में पिछड़ा एकीकरण है।

इ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

20. प्राधिकारी ने संगत अधिनियम और नियमों के तहत अर्थात् सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 9क(1) और पाटनरोधी नियमावली के नियम 25 के तहत उपर्युक्त अनुरोधों और तथाकथित प्रवंचना की जांच की है। इन नियमों में निम्नलिखित उल्लेख है:

सीमा प्रशुल्क अधिनियम की धारा 9क(1क), जिसमें केंद्र सरकार, ऐसी जांच, जिसे वह आवश्यक समझे, का यह मत है कि उप धारा (1) के तहत लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की प्रवंचना हुई है, या तो विवरण अथवा नाम अथवा उस वस्तु के संगठन में परिवर्तन करके, जो ऐसे पाटनरोधी शुल्क के अध्यक्षीन है अथवा ऐसी वस्तु का आयात अनअसेंबलड अथवा डिसअसेंबलड रूप अथवा उसके मूल देश को बदलकर अथवा निर्यात अथवा किसी अन्य तरीके से किया गया है जिसमें लगाया गया पाटनरोधी शुल्क अप्रभावी रखा गया है, वह ऐसी वस्तु अथवा उस देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क लगा सकती है, जैसी भी स्थिति हो।

21. पाटनरोधी नियमावली का नियम 25 पाटनरोधी शुल्क की प्रवंचना से संबंधित है। इसमें निम्नलिखित उल्लेख है:

(1) जहां पाटनरोधी शुल्क के अध्यक्षीन किसी वस्तु का पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के प्रयोजन के लिए अधिसूचित निर्यातक देश अथवा मूल देश सहित किसी भी देश से भारत में अनअसेंबलड, अनफिनिशड अथवा इनकम्प्लीट रूप में किया जाता है तथा उसे भारत में अथवा ऐसे देश में असेंबल, फिनिशड अथवा कम्प्लीट किया जाता है तो ऐसी असेंबलिंग, फिनिशिंग अथवा कम्प्लीशन को लागू पाटनरोधी शुल्क की प्रवंचना माना जाएगा, यदि:

(क) प्रचालन पाटनरोधी जांच के बाद अथवा ठीक उससे पूर्व प्रारंभ किया गया हो अथवा बढ़ाया गया हो तथा हिस्से पुर्जों एवं संघटकों का पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के प्रयोजन के लिए अधिसूचित मूल देश अथवा निर्यातक देश से आयात किया गया हो, और

(ख) असेंबलिंग, फिनिशिंग अथवा कम्प्लीशन के कार्य के परिणामस्वरूप मूल्य असेंबलड, फिनिशड अथवा कम्प्लीट वस्तु की लागत के 35 प्रतिशत से कम हो।

व्याख्या-I – मूल्य का अर्थ असेंबलड, फिनिशड अथवा कम्प्लीट वस्तु की लागत में से आयातित हिस्सों पुर्जों अथवा संघटकों का मूल्य घटाकर

व्याख्या-II – “मूल्य” का परिकलन करने के प्रयोजन के लिए बौद्धिक संपत्ति अधिकार, रॉयल्टी, तकनीकी जानकारी शुल्क तथा परामर्शी प्रभारों से संबंधित भुगतानों के निमित्त किए गए खर्चों को हिसाब में नहीं दिया जाएगा।

(2)

(3)

व्याख्या – इस उप नियम के प्रयोजन के लिए यह सिद्ध किया जाएगा कि व्यापार परिपाटी, व्यापार पैटर्न अथवा बिक्री के चैनलों में परिवर्तन हुआ है, यदि निम्नलिखित शर्तें पूरी की जाएं, यथा:

(क) औचित्य, आर्थिक अथवा अन्यथा का अभाव, पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने को छोड़कर,

(ख) यह साक्ष्य कि पाटनरोधी शुल्क के उपचारात्मक प्रभाव समान उत्पादों की कीमत और/अथवा गुणवत्ता के संदर्भ में कम किए गए हैं।

22. प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियम 25(1)(क) में प्रवंचना की मात्रा की शुरुआत अथवा वृद्धि स्थापित करने की अपेक्षा है और इसके अतिरिक्त नियम 25(1)(ख) में यह सिद्ध करने की आवश्यकता है कि उपर्युक्त मात्रा से जुड़ा “मूल्य वर्धन” इस उप नियम में आरंभिक तौर पर निर्धारित किए गए अनुसार है।

23. इस दावे के संबंध में कि घरेलू आयातक पाटनरोधी शुल्क की प्रवंचना नहीं कर रहा है, बल्कि इसके बजाए वह ऑफ्लोक्ससिन के उत्पादन के पिछड़े एकीकरण की प्रक्रिया में लगा हुआ है, प्राधिकारी का यह मत है कि अतिरिक्त विनिर्माण संयंत्र/ उपस्कर स्थापित करके पिछड़े एकीकरण को इस संदर्भ में देखा जाना है कि एकीकरण प्रक्रिया कितनी पीछे जा रही है और इस प्रक्रिया में वास्तविक रूप से कितना मूल्य वर्धन है। यह उन नियमों में पर्याप्त रूप से दिया गया है जिनमें प्राप्त किए जा रहे कम से कम 35 प्रतिशत के मूल्य वर्धन की आवश्यकता है। इस मामले में भी प्राप्त मूल्य वर्धन की जांच एक महत्वपूर्ण कारक है।

च. व्यापार पैटर्न में परिवर्तन

24. प्राधिकारी नोट करते हैं कि अनंतिम पाटनरोधी शुल्क 13 जुलाई, 2017 की अधिसूचना संख्या 35/2017-सीमा शुल्क (एडीडी) द्वारा संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद के आयातों पर पूर्व में लगाया गया था। निश्चयात्मक शुल्क 12 मार्च, 2018 की अधिसूचना संख्या 06/2018-सीमा शुल्क (एडीडी) द्वारा लगाए गए थे। इस प्रकार लगाए गए शुल्क लागू हैं। प्राधिकारी को अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद अर्थात् जुलाई, 2017 से मौजूदा पाटनरोधी शुल्क की प्रवृत्ति के तथ्य के आरंभ तथा वृद्धि की जांच करनी है। प्राधिकारी ने इस बात की भी जांच की है कि क्या व्यापार के पैटर्न में कोई परिवर्तन है तथा क्या यह परिवर्तन परिपाटी, प्रक्रिया अथवा कार्य से आगे बढ़ गया है जिसके लिए शुल्क लगाए जाने के बजाए अपर्याप्त उचित कारण अथवा आर्थिक औचित्य था। निम्नलिखित तालिका व्यापार पैटर्न दर्शाती है:

		आयात			
		ओ-एसिड		ओ-इस्टर	
		मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
		मी. टन	लाख रु.	मी. टन	लाख रु.
क)	वार्षिक				
	2015-16	602	14,084	-	-
	2016-17	456	8,642	-	-
	2017-18	134	2,169	305	4,212
ख)	मासिक				
1	15-अप्रैल	47	1,214	-	-
2	15-मई	63	1,559	-	-
3	15-जून	91	2,184	-	-
4	15-जुलाई	95	2,240	-	-
5	15-अगस्त	56	1,308	-	-
6	15-सितंबर	86	2,014	-	-
7	15-अक्तूबर	24	583	-	-
8	15-नवंबर	12	271	-	-
9	15-दिसंबर	7	212	-	-
10	16-जनवरी	21	453	-	-
11	16-फरवरी	60	1,240	-	-
12	16-मार्च	40	806	-	-
13	16-अप्रैल	20	500	-	-
14	16-मई	67	1,355	-	-
15	16-जून	47	999	-	-

		आयात			
		ओ-एसिड		ओ-इस्टर	
		मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
		मी. टन	लाख रु.	मी. टन	लाख रु.
16	16-जुलाई	75	1,467	-	-
17	16-अगस्त	16	303	-	-
18	16-सितंबर	11	205	-	-
19	16-अक्तूबर	41	760	-	-
20	16-नवंबर	32	568	-	-
21	16-दिसंबर	28	497	-	-
22	17-जनवरी	64	1,073	-	-
23	17-फरवरी	40	643	-	-
24	17-मार्च	17	272	-	-
25	17-अप्रैल	24	372	-	-
26	17-मई	42	645	-	-
27	17-जून	55	921	-	-
28	17-जुलाई	-	-	24	325
29	17-अगस्त	12	206	64	843
30	17-सितंबर	-	-	56	738
31	17-अक्तूबर	-	-	16	214
32	17-नवंबर	-	-	25	326
33	17-दिसंबर	-	-	-	-
34	18-जनवरी	-	-	40	563
35	18-फरवरी	1	25	32	475
36	18-मार्च	-	-	48	730
37	18-अप्रैल			16	232
38	18-मई			40	604
39	18-जून			16	246

25. यह नोट किया जाता है कि चीन से ओ-एसिड के आयातों की मात्रा में जुलाई, 2017 से अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद गिरावट आई जबकि चीन से ओ-इस्टर के आयात तब से ही शुरू हुए। इस प्रकार यह देखा जाता है कि जब ओ-एसिड के आयातों में गिरावट आई और वे गैर-मौजूद हो गए, ओ-इस्टर के आयातों में अनंतिम

पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से वृद्धि हुई। अन्तिम शुल्क लगाए जाने के समय से ओ-एसिड से ओ-इस्टर में आयातों में परिवर्तन व्यापार के पैटर्न में परिवर्तन सिद्ध करता है।

च.1 पूर्ण वस्तु की एसेंबली, परिष्करण की लागत का 35 प्रतिशत से कम मूल्य वर्धन

26. पाटनरोधीनियमावली के नियम 25(1)(ख) में यह अपेक्षा है कि "असेंबलिंग, फिनिशिंग अथवा कम्प्लीशन के कार्य के परिणामस्वरूप मूल्य असेंबलड, फिनिशड अथवा कम्प्लीट वस्तु की लागत के 35 प्रतिशत से कम हो।" प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने उत्तर नहीं दिया है। इसके अतिरिक्त, जिस आयातक ने उत्तर दिया है, उसने संबद्ध सामान को अंतिम निचले स्तर के उत्पाद में परिवर्तित किया है। अतः प्राधिकारी ने पैरा 6(8) के प्रावधानों के अनुसार जांच की अवधि के दौरान ओ-इस्टर से ओ-एसिड में मूल्य वर्धन का मूल्यांकन करने के लिए मैसर्स आरती ड्रग्स लि. की उत्पादन लागत के आंकड़ों पर विचार किया है।
27. नियम 25(1)(ख) के अनुसार, मूल्यांकन किए गए ओ-इस्टर (पीयूआई) से ओ-एसिड (पीयूसी) में मूल्य वर्धन निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:

विवरण		परिवर्तनकारक	रु./मी. टन	रु./मी. टन
कच्ची सामग्री लागत ओ-इस्टर			***	
परिवर्तनलागत	ओ-इस्टर स्टेज तक		***	
	इस्टर से ओ-एसिड			
	ओ-इस्टर तक कुल लागत			***
	ओ-एसिड के लिए ओ-इस्टर	1.11		***
	ओ-एसिड के लिए कच्ची सामग्री और परिवर्तन लागत		***	
	ओ-एसिड की लागत			***

विवरण	यूओएम	कीमत
मूल्य वर्धन	रु./मी. टन	***
ओ-एसिड की लागत	रु./मी. टन	***
मूल्य वर्धन	%	***
मूल्य वर्धन	रेंज %	0 -10

28. आयातित जांचाधीन उत्पाद से निकाला गया विचाराधीन उत्पाद का पहुँच मूल्य अर्थात् मूल्य वर्धन के साथ जांचाधीन उत्पाद के पहुँच मूल्य को समायोजित करने के बाद चीन से परिष्कृत रूप में सीधे ही आयात करने पर मौजूदा पाटनरोधी शुल्क सहित विचाराधीन उत्पाद के पहुँच मूल्य से कम है।
29. जहाँ तक इस तर्क का संबंध है कि ओ-इस्टर से निचले स्तर के उत्पाद ऑफ्लोक्सासिन के चरण से महत्वपूर्ण मूल्य वर्धन है, यह नोट किया जाता है कि जांच ओ-इस्टर से ओ-एसिड में उत्पादन से संबंधित है।

30. प्राधिकारी ने ओ-एसिड के बजाए ओ-इस्टर के उत्पादन और निर्यातों से अन्य आर्थिक लाभ/लागत बचत और लागत लाभ विश्लेषण करके विचाराधीन उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने तथा "व्यापार के पैटर्न में परिवर्तन" के बीच संयोग की जांच की है। यह नोट किया जाता है कि ओ-एसिड पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से पूर्व ओ-इस्टर के लिए कोई बाजार अथवा आवश्यकता नहीं थी। ओ-एसिड पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से ओ-इस्टर के आयात शुरू हो गए।
31. प्राधिकारी ने ओ-इस्टर से ओ-एसिड की उत्पादन प्रक्रिया में शामिल मूल्य वर्धन पर विचार किया है। ओ-इस्टर से ओ-एसिड का उत्पादन करने में शामिल मूल्य वर्धन कानून के तहत निर्धारित सीमाओं से काफी कम होना निर्धारित है। ओ-इस्टर का उत्पादन ऑफ्लोक्सासिन के लिए विनिर्माण प्रक्रिया में ओ-एसिड के उत्पादन से पूर्व का ही कदम है। ओ-इस्टर को ओ-एसिड का उत्पादन करने के लिए एसिड वाले पानी में हाइड्रोलाइज किया जाता है। ओ-एसिड पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण चीन में उत्पादकों ने उसे ओ-एसिड के अपरिष्कृत/अंतिम चरण से पूर्व के ओ-इस्टर पर रोकना तथा उसे भारत में निर्यात करना लाभप्रद पाया। इस प्रकार जांच यह दर्शाती है कि भारत को ओ-इस्टर के निर्यात के लिए ओ-एसिड पर पाटनरोधी शुल्क से बचने के लिए प्रोत्साहन के अलावा और कोई आर्थिक औचित्य मौजूद नहीं है।

ख. जांचाधीन उत्पाद का पाटन और पाटनरोधी शुल्क के उपचारात्मक प्रभावों को कम करना

ख.1 निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध

32. क्षति के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:
- इनफिनिटी ओ-एसिड के उत्पादन अथवा बिक्री के लिए कोई बहीखाते नहीं रखता। इस प्रकार, घरेलू उद्योग पर किसी तरह कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। ओ-इस्टर से ऑफ्लोक्सासिन का उत्पादन कार्मिकों बिजली, ईंधन आदि के संदर्भ में महंगा है।
 - चूंकि, याचिकाकर्ता खुले बाजार में ओ-एसिड की बिक्री के लिए प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर रहा है, अतः ओ-इस्टर (ओ-एसिड के उत्पादन में प्रयुक्त प्रमुख कच्ची सामग्री) के आयातों से याचिकाकर्ता को क्षति नहीं हो सकती।
 - आरती ड्रग्स ओ-एसिड की घरेलू मांग पूरा नहीं कर रही है क्योंकि उन्होंने कोई बिक्री नहीं की है। इस प्रकार क्षति अन्य कारकों के कारण हुई।

ख.2 घरेलू उद्योग द्वारा अनुरोध

33. क्षति के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:
- ओ-एसिड के बजाए भारत में ओ-इस्टर का आयात किया जा रहा है और आगे के प्रयोग के लिए ओ-एसिड/ऑफ्लोक्सासिन में परिवर्तित किया जा रहा है। इससे ओ-एसिड पर शुल्क अप्रभावी हो गया है। आयात अनंतिम शुल्क लगाए जाने के समय से ओ-एसिड से ओ-इस्टर में परिवर्तित हो गए हैं।
 - उत्पाद की कीमतों और मात्रा के संदर्भ में व्यापार के पैटर्न में काफी परिवर्तन है और उससे ओ-एसिड के आयातों पर पूर्व में लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के उपचारात्मक प्रभाव कम हो रहे हैं।
 - ओ-इस्टर के आयातों से पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद घरेलू उद्योग के लिए व्यापारिक बाजार का अभाव हो गया है। इससे मौजूदा शुल्क उद्विग्न हो गए हैं क्योंकि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से बाजार में उचित व्यवहार करना था परंतु उसकी मौजूदगी के कारण ऐसा नहीं हुआ है।
 - जांचाधीन उत्पाद की कीमतों से निकाला गया विचाराधीन उत्पाद का पहुँच मूल्य पाटनरोधी शुल्क के बाद भी आयातित विचाराधीन उत्पाद की पहुँच कीमतों से बहुत कम है। वस्तुतः जांचाधीन उत्पाद से निकाला गया विचाराधीन उत्पाद का पहुँच मूल्य शुल्क लगाए जाने से पूर्व आयात किए जा रहे विचाराधीन उत्पाद के स्तरों से काफी कम है। इससे शुल्क अप्रभावी हुए हैं।
 - निकाला गया विचाराधीन उत्पाद काफी मार्जिन तक विचाराधीन उत्पाद की अनुमानित बिक्री कीमतों की कटौती कर रहा है।

ख.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

34. प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियम 26(4) में यह सिद्ध करने की अपेक्षा है कि मौजूदा पाटनरोधी शुल्क की प्रवंचना करने वाली वस्तु भारत में एक प्राथमिक शर्त के रूप में पाटित की जाती है। इसके अतिरिक्त, नियम 26(5) में उल्लेख

है कि नियम 6 के साक्ष्य/प्रक्रिया संबंधी अपेक्षाएं इस नियम के तहत की गई जांच पर आवश्यक परिवर्तनों सहित लागू होंगी।

35. प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने प्रश्नावली के उत्तर दायर नहीं किए हैं।
36. नियम 6(8) में यह प्रावधान है कि ऐसे मामले में, जहां कोई हितबद्ध पक्षकार उसकी पहुँच आवश्यक सूचना तक न होने अथवा एक पर्याप्त अवधि के भीतर आवश्यक सूचना उपलब्ध न कराए अथवा जांच में काफी अड़चन डाले, वहां निर्दिष्ट प्राधिकारी उसके पास उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने जांच परिणाम रिकार्ड कर सकता है और केंद्र सरकार को ऐसी सिफारिश कर सकता है जो उन परिस्थितियों में उपयुक्त हो।
37. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जबकि याचिकाकर्ता ने अनुरोध किया है कि चीन जन. गण. को गैर बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में माना जाए, क्योंकि इस मामले में किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने उत्तर नहीं दिया है और याचिकाकर्ता द्वारा बाजार स्थिति के संबंध में उठाए गए मुद्दों की जांच का सहारा लिए जाने के लिए नियम 6(8) में आवश्यकता है, अतः इसकी अपेक्षा नहीं है।
38. प्राधिकारी ने नियम 6(8) का सहारा लेते हुए मूल जांचों के समय पूर्व में सिद्ध और ओ-इस्टर से ओ-एसिड में मूल्य वर्धन के लिए विधिवत समायोजित ओ-इस्टर के लिए सामान्य मूल्य पर विचार करते हुए जांचाधीन उत्पाद अर्थात् ओ-इस्टर के लिए सामान्य मूल्य निर्मित किया है। सामान्य मूल्य को दो अवधियों के दौरान कच्ची सामग्री की लागत में अंतरों के लिए भी समायोजित किया गया है।
39. जांच की अवधि में जांचाधीन उत्पाद की कारखानागत निर्यात कीमत का मूल्यांकन करने के लिए डीजीसीआईएस के आंकड़ों को अपनाया गया है। जांच की अवधि के दौरान जांचाधीन उत्पाद की भारित औसत "सीआईएफ" कीमत 1383 रुपए/कि.ग्रा. मानी गई है। समुद्री भाड़ा, कमीशन, पत्तन व्यय, बैंक प्रभार और अंतर्देशीय भाड़ा, व्यय के निमित्त समायोजन याचिकाकर्ता द्वारा दिए गए आंकड़ों के आधार पर और प्राधिकारी की ऐसे समायोजनों से संबंधित मानदंडों के संबंध में विगत सतत परिपाटी के आधार पर क्रमशः सीआईएफ की 6.92 रुपए/कि.ग्रा., एफओबी का 1 प्रतिशत, एफओबी का 0.5 प्रतिशत, एफओबी का 0.5 प्रतिशत और एफओबी का 0.5 प्रतिशत की सीमा तक माने गये हैं। निम्नलिखित तालिका पाटन मार्जिन दर्शाती है:

पाटन मार्जिन का परिकलन

विवरण	रु./मी. टन
निर्मित सामान्य मूल्य ओ-इस्टर	***
निवल निर्यात कीमत	***
पाटन मार्जिन	***
पाटन मार्जिन %	***
पाटन मार्जिन (रेंज %)	20-30%

40. पाटन मार्जिन *** डॉलर/मी. टन के रूप में माने जाने का प्रस्ताव है जो काफी है और पाटनरोधी नियमावली के तहत न्यूनतम सीमाओं से अधिक है।
41. इस प्रकार, व्यापार पैटर्न में परिवर्तन, निर्धारित सीमा से कम मूल्य वर्धन और पाटन जारी रहने की स्थिति सामूहिक रूप से इस मामले में मौजूद होना सिद्ध है।
- ज. प्रवंचना द्वारा विचाराधीन उत्पाद पर मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के उपचारात्मक प्रभाव को कम करना**
42. नियम 25 की व्याख्या में निम्नलिखित प्रावधान है:

व्याख्या – इस उप नियम के प्रयोजन के लिए यह सिद्ध किया जाएगा कि व्यापार परिपाटी, व्यापार पैटर्न अथवा बिक्री के चैनलों में परिवर्तन हुआ है, यदि निम्नलिखित शर्तें पूरी की जाएं, यथा:

(क) औचित्य, आर्थिक अथवा अन्यथा का अभाव, पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने को छोड़कर,।

(ख) यह साक्ष्य कि पाटनरोधी शुल्क के उपचारात्मक प्रभाव समान उत्पादों की कीमत और/अथवा गुणवत्ता के संदर्भ में कम किए गए हैं।

ज.1 मात्रात्मक प्रभाव

ज.1.1 ओ-एसिड (विचाराधीन उत्पाद) से ओ-इस्टर (जांचाधीन उत्पाद) में पूर्ण परिवर्तन

43. प्राधिकारी ने संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद और जांचाधीन उत्पाद, दोनों के आयातों की मात्रा और मूल्य का मूल्यांकन करने के लिए डीजीसीआईएंडएस से लिए गए लेन-देन वार आयात आंकड़ों पर विचार किया है। जबकि ओ-इस्टर के आयात अनंतिम शुल्क लगाए जाने के बाद जुलाई, 2017 से ही काफी बढ़े हैं, ओ-एसिड के आयातों में गिरावट आई है और वे मौजूद नहीं हैं। इस प्रकार, ओ-एसिड (पीयूसी) के आयातों के स्थान पर लगभग ओ-इस्टर (पीयूआई) आ गए हैं।

वर्ष/अवधि	आयात			
	ओ-एसिड		ओ-इस्टर	
	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
	मी. टन	लाख रु.	मी. टन	लाख रु.
2015-16	602	14,084	-	-
2016-17	456	8,642	-	-
2017-18	134	2,169	305	4,212
2018-19 (अप्रैल – जून)	-	-	72	1,083

44. प्राधिकारी यह पाते हैं कि चीन जन. गण. से ओ-एसिड के आयात में अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद गिरावट आई है। तथापि, जांचाधीन उत्पाद ओ-इस्टर का आयात आरंभ हो गया और ओ-एसिड पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद बढ़ गया है।

ज.1.2 बाजार हिस्सा लेने में असमर्थता

45. मूल जांच में यह नोट किया गया था कि घरेलू उद्योग में एक मात्र उत्पादक होने के बावजूद अपेक्षित सभी प्रयास करने का दावा किया है, परंतु व्यापारिक बिक्री करने में असमर्थ था।

ज.2 कीमत प्रभाव

46. घरेलू उद्योग की कीमतों पर ओ-इस्टर के आयातों के प्रभाव की जांच कीमत कटौती के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के लिए ओ-एसिड की कीमत निकालने के लिए उपयुक्त समायोजन के बाद जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देश से जांचाधीन उत्पाद के लिए आयातों की पहुँच कीमत की तुलना घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की ओ-एसिड के लिए बिक्री कीमत से की गई थी। घरेलू उद्योग के लिए व्यापारिक बाजार के अभाव में यह विश्लेषण करते समय प्राधिकारी ने उचित एवं अखंडित तुलना सुनिश्चित करने के लिए सभी उचित समायोजनों पर विचार करने के बाद अनुमानित आधार पर घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत पर विचार किया है। ओ-इस्टर को ओ-एसिड में बदलने में भारत में किए गए खर्च को प्राधिकारी द्वारा निर्धारित मूल्य वर्धन के आधार पर जोड़ा गया है। इस प्रकार, ओ-इस्टर के आयातों की पहुँच कीमत मूल्य वर्धन की राशि तक ऊपर की ओर समायोजित की गई थी और उसके बाद घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से तुलना की गई थी। यह तुलना दर्शाती है कि ओ-इस्टर के आयातों की समायोजित पहुँच कीमत घरेलू उद्योग द्वारा ओ-एसिड की अनुमानित बिक्री कीमत से काफी कम है। इस प्रकार, ओ-इस्टर के आयातों के परिणामस्वरूप कीमत कटौती हो रही है और प्रतिकूल कीमत प्रभाव पड़ रहा है। इससे विचाराधीन उत्पाद पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क का प्रभाव समाप्त हो गया है। क्षति की अवधि के दौरान ओ-इस्टर से ओ-एसिड की परिकलित कीमत भी ओ-एसिड के आयातों की पहुँच कीमत से काफी कम दर्शाती है।

47. निम्नलिखित तालिका प्रवंचना की मात्रा दर्शाती है:

विवरण	यूओएम	जांच की अवधि
ओ-इस्टर की पहुँच कीमत	रु./मी. टन	1,490
मूल्य वृद्धि	%	***
मूल्य वृद्धि	रु./मी. टन	***
ओ-एसिड की पहुँच कीमत (निकाली गई)	रु./मी. टन	***
ओ-एसिड की पहुँच कीमत (वास्तविक)	रु./मी. टन	***
पाटनरोधी शुल्क सहित ओ-एसिड का पहुँच मूल्य	रु./मी. टन	***

विवरण	यूओएम	मूल्य
ओ-एसिड का पहुँच मूल्य	रु./कि.ग्रा.	1,544
ओ-एसिड की निवल विक्री वसूली	रु./कि.ग्रा.	***
कीमत कटौती	रु./कि.ग्रा.	***
कीमत कटौती	%	***
कीमत कटौती	रेंज %	10-20

झ. प्रकटन पश्चात टिप्पणियां

झ.1 घरेलू उद्योग का दृष्टिकोण

48. घरेलू उद्योग द्वारा प्रकटन पश्चात किए गए अनुरोध नीचे दिए गए हैं
 - i. ऑफ्लोसेक्सिन इस्टर अथवा '9,10- डॉयफ्लूओरो-3-मिथाईल-7-ऑक्सो-2,3-डॉयहाईड्रो-7 एच-पायरिडो (1,2,3-डीई)1,4- बैजोक्साजिन-6-कारबोसिलिक इस्टर' का वर्गीकरण सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 29 और उप शीर्षक 29349900 के अंतर्गत किया गया है। सीमा प्रशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और यह किसी भी प्रकार से जांच के कार्य क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।
 - ii. ओ-एसिड का सर्वप्रथम उत्पादन ओ-इस्टर (जांच के अधीन उत्पाद) के रूप में किया जाता है जो ओ-एसिड के उत्पादन में अंतिम चरण से पूर्व का चरण ही है। ओ-एसिड के लिए संपूर्ण उत्पादन प्रक्रिया शुरू करने के बजाए, चीन के उत्पादक इस्टर को बन्द कर रहे हैं और भारत में इसका निर्यात कर रहे हैं। भारतीय उपभोक्ता, जिन्हें ऑफ्लोसेक्सिन के उत्पादन के लिए ओ-एसिड की आवश्यकता होती है, इस्टर के चरण से शुरू होता है क्योंकि इस्टर में एसिड के सभी आवश्यक लक्षण होते हैं और उन्हें प्रक्रिया के माध्यम से ऑफ्लोसेक्सिन में परिवर्तित किया जाता है। इस कारण से संबद्ध वस्तु, ओ-एसिड का निर्यात भारत में, यद्यपि उपांतिम रूप में और अलग-अलग नाम से, किया जाना जारी है।
 - iii. ओ-इस्टर के चरण से शामिल प्रक्रिया केवल हाइड्रोलीसिस है और यह केवल वृद्धिगत प्रक्रिया है। ओ-इस्टर का सर्वप्रथम हाइड्रोलाइजेशन ओ-एसिड प्राप्त करने के लिए अम्लीय जल (इस प्रकार से कथित यह अम्लीय लक्षणों को प्राप्त कर सके) में किया जाता है। यदि पी.यू.आई. का सीधा उपयोग ऑफ्लोसेक्सिन के उत्पादन में किया जाना हो

तब इसका उपयोग बिना सुखाये ठोस ओ-एसिड को अलग किये जाने के बाद ही किया जा सकता है। हालांकि, यदि उसकी बिक्री आगे आफलोसेक्सिन उत्पादन के लिए मर्चेट बाजार में की जानी हो तब इसे ठंडा किया जाता है, छाना जाता है और इसे सुखाया जाता है जिससे कि ओ-एसिड का केक तैयार हो सके और उसे मर्चेट बाजार में उपलब्ध कराया जा सके।

- iv. ओ-इस्टर से ओ-एसिड की प्रक्रिया में शामिल मूल्य वर्धन केवल लगभग 3.49 प्रतिशत है जो न्यूनतम है और यह कानून के अंतर्गत यथा निर्धारित सीमाओं से बहुत कम है। इसका आगे ओ-एसिड में प्रसाधित करने / परिवर्तित करने के अलावा कोई अन्य उपयोग नहीं है और इस कारण से इसका ओ-एसिड का उत्पादन करने के लिए उपयोग किये जाने के अलावा कोई अन्य बाजार नहीं है। मूल्य वर्धन के लिए जांच के अधीन उत्पाद के पहुंच मूल्य का समायोजन करने के बाद अर्थात् आयात किए गए जांच के अधीन उत्पाद से प्राप्त विचाराधीन उत्पाद का पहुंच मूल्य मौजूदा पाटन रोधी शुल्क सहित विचाराधीन उत्पाद के पहुंच मूल्य की तुलना में तब कम होता है। जब चीन से तैयार रूप में उसका आयात प्रत्यक्ष रूप से किया जाता हो
- v. अनंतिम शुल्क लगाए जाने के समय से व्यापार के पैटर्न में परिवर्तन हुआ है। ओ-एसिड के आयातों के स्थान पर ओ-इस्टर का आयात हुआ है। ओ-इस्टर के रूप में ओ-एसिड का तैयार न किये गये रूप का निर्यात 2017 के जुलाई में अनंतिम पाटन रोधी शुल्क लगाए जाने के तत्काल बाद शुरू हुआ। अनंतिम शुल्कों के लगाने के पूर्व, ओ-इस्टर का आयात नहीं होता था। शुल्कों को लगाए जाने के बाद, ओ-इस्टर के आयातों में वृद्धि हुई और ओ-एसिड का आयात लगभग बंद हो गया है। ओ-एसिड के आयातों पर अनंतिम शुल्क लगाये जाने से पूर्व भारत में ओ-एसिड का आयात नहीं होता था।
- vi. लगभग समतुल्य उत्पाद अर्थात् ओ-इस्टर के रूप में ओ-एसिड भारतीय बाजार में पाटित कीमतों पर आ रही है और इसके माध्यम से मौजूदा शुल्क अप्रभावी हो गया है।
- vii. सर्वप्रथम, देश में ओ-एसिड के पाटन और उसके बाद अब देश में ओ-इस्टर के पाटन के कारण, घरेलू उद्योग बाजार में ओ-एसिड को नहीं बेच पाया है और इसे संयंत्र की क्षमता के बहुत कम उपयोग का सामना करना पड़ रहा है। बाजार में ओ-एसिड की बिक्री करने के लिए अनेक सार्वजनिक पेशकश करने के बावजूद, याचिकाकर्ता ओ-एसिड के सतत पाटन यद्यपि अलग-अलग रूपों में, के परिणाम स्वरूप वैसा करने में सक्षम नहीं हो पाया है।
- viii. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन किए गए ओ-एसिड की नोशनल बिक्री कीमत के साथ ओ-इस्टर में किए गए परिवर्तन में उचित समायोजन पर विचार करने के बाद ओ-इस्टर की पहुंच मूल्य से ओ-एसिड की प्राप्त की गई लागत की तुलना यह दर्शाती है कि ओ-इस्टर की आयातों की समायोजित पहुंच कीमत घरेलू उद्योग द्वारा ओ-एसिड की नोशनल बिक्री कीमत से बहुत अधिक कम है। ओ-इस्टर के आयातों के फलस्वरूप कीमतों में कटौती हो रही है और इसका कीमत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। उससे विचाराधीन उत्पाद पर लगाए गए पाटन रोधी शुल्क की प्रभाविता में कमी हो रही है। क्षति की अवधि के दौरान ओ-इस्टर से ओ-एसिड की परिकलित कीमत भी ओ-एसिड की आयातों की पहुंच कीमत से बहुत कम दर्शायी गई है।
- ix. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पाटन रोधी जांच में किए गए विचार के अनुसार ओ एसिड की पहुंच मूल्य लगभग 2358 रु. प्रति किलो ग्राम था। हालांकि जांच की वर्तमान अवधि में ओ-इस्टर का पहुंच मूल्य घटकर 1490 रु. प्रति किलो ग्राम हो गया। मूल्य वर्धन पर विचार करने के बाद भी, ओ-एसिड के रूप में पहुंच मूल्य 1542 रु. प्रति किलो ग्राम होता है जो यह दर्शाता है कि ओ-इस्टर की आयात कीमत ओ-एसिड की आयात कीमत की तुलना में बहुत कम है।

झ. 2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों का दृष्टिकोण

49. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन पश्चात् किए गए अनुरोध नीचे दिए गए हैं:
- i. याचिकाकर्ता ऑफलोसेक्सिन का केवल निर्माण करने के लिए और न कि घरेलू बाजार में बिक्री के लिए संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन कर रहा है। याचिकाकर्ता ने घरेलू बाजार में कोई बिक्री नहीं की है और यह केवल इन वस्तुओं के एक

कैप्टिव उपभोक्ता के रूप में और न कि घरेलू विक्रेता के रूप में मौजूद है। याचिकाकर्ता को घरेलू उद्योग के रूप में नहीं माना जा सकता है क्योंकि यह केवल एक कैप्टिव उपभोक्ता है और न कि घरेलू विक्रेता और इसलिए यह घरेलू उद्योग के रूप में कहे जाने के लिए मानदंडों को पूरा नहीं करता है।

- ii. याचिकाकर्ता ने ओ-एसिड की बिक्री करने के लिए गलत पेशकश किए हैं। अग्रिम भुगतान और चार सप्ताह के बाद सुपुर्दगी के शर्त के साथ 2500 रु. की अधिकतम दर उचित नहीं है। ऐसी कीमत पर तैयार उत्पाद ऑफ्लोसेक्सिन बाजार में प्रतियोगी नहीं रह पाएगा और उसकी तुलना आफ्लोसेक्सिन के लिए आरती द्वारा दिए गए कीमत और मूल सीमा शुल्क और पाटन रोधी शुल्क के साथ आफ्लोसेक्सिन के आयात कीमत से की जानी चाहिए। ऐसी अधिक कीमत के साथ, आफ्लोसेक्सिन का निर्माण करने की लागत पर भी विचार किया जाना चाहिए क्योंकि इसके लिए 300 रु. का मूल्यवर्धन अपेक्षित है।
- iii. असीमता ने बैकवर्ड एकीकरण किया है और यह ओ-एसिड के किसी उत्पादन के लिए कारण नहीं है क्योंकि यह उसका गुप्त रूप से उपयोग करता है। यह सीधे ओ-इस्टर से और न कि ओ-एसिड से ऑफ्लोसेक्सिन का उत्पादन करता है। ओ-इस्टर से आफ्लोसेक्सिन में परिवर्तन के लिए मूल्यवर्धन 35 प्रतिशत से अधिक है।
- iv. ओ-इस्टर का सामान्य मूल्य मूल जांच के समय के पूर्व कभी भी सिद्ध नहीं किया गया था क्योंकि मूल जांच ओ-एसिड और न कि ओ-इस्टर के संदर्भ में था।
- v. उपचारात्मक प्रभावों को हानि पहुंचाने को दर्शाते हुए कोई भी आंकड़ा घरेलू उद्योग द्वारा आज की तारीख तक उपलब्ध नहीं कराया गया था। घरेलू उद्योग को इस बात को सिद्ध करने के लिए अगोपनीय पाठ में कम से कम सूचीबद्ध संख्या उपलब्ध कराने के लिए कहा जाये कि किस प्रकार से जांच के अधीन उत्पाद के आयातों से क्षति हो रही है। उसके अभाव में, उपचारात्मक प्रभावों को हानि पहुंचाने की जांच नहीं की जा सकती है।
- vi. जांच की अवधि में ओ-एसिड का कोई आयात नहीं होने की स्थिति में ओ-एसिड की पहुंच कीमत का निर्धारण किस प्रकार से किया जा सकता है। जब कोई मर्चेन्ट बिक्री नहीं की गई है तब किस प्रकार से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत का निर्धारण किया जा सकता है। कीमत संबंधी किसी आंकड़ों के न होने की स्थिति में उपचारात्मक प्रभावों को हानि पहुंचाने की जांच नहीं की जा सकती है।

अ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

50. हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त प्रकटन पश्चात अनुरोधों में उठाये गए मुद्दों को व्यापक रूप से जांच की अवधि के दौरान पूर्व में उठाया गया है और उसका उपयुक्त रूप से समाधान भी कर दिया गया है। हालांकि स्पष्टता के वास्ते, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोधों की जांच नीचे दिए गए अनुसार की जा रही है:
 - i. याचिकाकर्ता के संबंध में मर्चेन्ट बाजार के लिए इन वस्तुओं का उत्पादन नहीं करने और कैप्टिव उपभोग के लिए ही इनका उपयोग करने के दावे के संबंध में, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की स्थिति से संबंधित मुद्दों पर चर्चा न केवल इस जांच के विभिन्न चरणों में की गई बल्कि जांच के दौरान भी की गई है जिसके फलस्वरूप चीन से ओ-एसिड के आयात पर पाटन रोधी शुल्क लगाना पड़ा। यह नोट करने के लिए कुछ अन्य चीजों को जोड़े जाने की आवश्यकता नहीं है कि पूर्व के जांच में यथा निर्धारित घरेलू उद्योग वही है जो इस मामले में है। प्राधिकारी यह उल्लेख करना चाहेंगे कि किसी प्रवंचना संबंधी जांच में, प्राधिकारी का मुख्य ध्यान इस पर होता है कि क्या पूर्व में लगाए गए पाटन रोधी शुल्क के संबंध में गलत कथन दिया गया है अथवा नहीं।
 - ii. सामान्य मूल्य की गणना के मुद्दों के संबंध में, यह स्पष्ट किया जाता है कि प्राधिकारी ने नियम-6(8) का सहारा लिया है और मूल जांच के समय पूर्व में स्थापित ओ-एसिड के लिए निर्धारित सामान्य मूल्य और ओ-इस्टर से ओ-एसिड तक मूल्य वर्धन के लिए विधिवत सामान्य मूल्य पर विचार करते हुए जांच के अधीन उत्पाद अर्थात् ओ-इस्टर के लिए सामान्य मूल्य निर्धारित किया है। सामान्य मूल्य का सामायोजन भी दो अवधियों के दौरान कच्चे माल की लागतों में अंतरों के लिए किया गया है।

- iii. इस तर्क के संबंध में कि हितबद्ध पक्षकार का ओ-एसिड का उत्पादन नहीं करते हैं और प्रत्यक्ष रूप से आफ्लोसेक्सिन का उत्पादन करने के लिए ओ-इस्टर का उपयोग करते हैं, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग तथा उत्तर देने वाले आयातक के परिसरों में सत्यापन और रिकार्ड में रखे गए साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि ओ-इस्टर को आफ्लोसेक्सिन में परिवर्तित करने की प्रक्रिया ओ-इस्टर को सर्वप्रथम ओ-एसिड में परिवर्तित किए बिना नहीं की जा सकती है।
- iv. यह भी नोट किया जाता है कि चूंकि यह प्रवंचना के संबंध में जांच है अतः मूल्यवर्धन के पहलू को प्रवंचना से संबंधित उत्पाद से प्रवंचना वाले उत्पाद तक देखा जाना है। उसको देखते हुए यह विचार किया जाता है कि मूल्य वर्धन को ओ-इस्टर से ओ-एसिड में और न कि ओ-इस्टर से आफ्लोसेक्सिन में परिवर्तन से देखा जाना अपेक्षित है। इस प्रकार का मूल्य वर्धन कानून के अंतर्गत यथा निर्धारित न्यूनतम सीमाओं से बहुत कम है।
- v. इस तर्क के संबंध में कि मर्चेट बिक्री की कमी के कारण, बिक्री की कीमत का निर्धारण नहीं किया जा सकता है प्राधिकारी यह स्मरण करते हैं कि मूल जांच के समय भी कीमत में कटौती की गणना ओ-एसिड की पहुंच मूल्य की तुलना बिक्री की कीमत से करते हुए की गई थी जिसे ओ-एसिड से आफ्लोसेक्सिन संयंत्र की अंतरण कीमत के रूप में ली जाती है। प्राधिकारी ने इस अंतरण कीमत को आदर्शतम कीमत के रूप में माना है। इस प्रकार से प्राधिकारी ने उचित और बिना किसी तोड़ मरोड़ के तुलना सुनिश्चित करने के लिए सभी उचित समायोजनों पर विचार करने के बाद नोशनल आधार पर घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत को माना है।

ज. निष्कर्ष

51. घरेलू उद्योग और विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों की जांच करने के बाद और ऊपर में दिए गए विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि
 - i. दिनांक 12 मार्च, 2018 के सीमा शुल्क अधिसूचना संख्या 6/2018 -सीमा शुल्क (ए.डी.डी.) के द्वारा चीन जन.गण के मूल के और वहां से निर्यात किए गए ओ-एसिड के आयातों पर लगाए गए पाटन रोधी शुल्क के संबंध में पाटन रोधी नियमावली के नियम 25 (3) के अनुसार चीन जन.गण से ओ-इस्टर के निर्यात के द्वारा गलत व्यापार दिया गया था। भारत में ओ-इस्टर का आयात ओ-एसिड के आयातों पर पूर्व में लगाए गए पाटन रोधी शुल्क के बारे में प्रवंचना सिद्ध करता है।
 - ii. ओ-इस्टर का निर्यात जांच की अवधि के दौरान पाटित कीमतों पर की गई है।
 - iii. चीन से ओ इस्टर के निर्यात को दिनांक 12 मार्च, 2018 के सीमा शुल्क अधिसूचना संख्या 6/2018 -सीमा शुल्क (ए.डी.डी.) के द्वारा चीन जन.गण के मूल के और वहां से निर्यात किए गए ओ-एसिड के आयातों पर मौजूदा पाटन रोधी उपाय को हानि पहुंची है।

ट. सिफारिश

52. उपर्युक्त को ध्यान में रख कर प्राधिकारी एच एस उप शीर्षक 2934 9900 के अंतर्गत वर्गीकृत 'आफ्लोसेक्सिन इस्टर' अथवा '9,10-डायफ्लूओरो-3-मिथाइल-7-आक्सो-2,3-डायहाड्रो-7 एच-पायरिडो (1,2,3-डीई) 1,4-बैंजोक्साजिन-6-कार्बोसिलिक इस्टर' का चीन जन गण के मूल के और वहां से निर्यात किए गए का आयात करने के लिए दिनांक 12 मार्च, 2018 के सीमा शुल्क अधिसूचना संख्या 06/2018-सीमा शुल्क (एडीडी) के द्वारा लगाए गए और चीन जन गण के मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए 'ओ-एसिड' पर मौजूदा पाटन रोधी शुल्क की अवधि को बढ़ाये जाने की सिफारिश करते हैं। शुल्क की राशि उसी आधार पर तय की जायेगी जिसे उक्त सीमा शुल्क अधिसूचना में अधिसूचित किया गया है। पाटन रोधी शुल्क वित्त मंत्रालय द्वारा इसकी अधिसूचना की तिथि से लागू होगी और पाटन रोधी शुल्क की वैधता उस समय तक होगी जिस समय तक दिनांक 12 मार्च, 2018 के सीमा शुल्क अधिसूचना संख्या 06/2018-सीमा शुल्क (एडीडी) के माध्यम से लगाए गए ओ-एसिड पर शुल्क जारी रहेगी।
53. इस अधिसूचना के उद्देश्य से आयातों की पहुंच मूल्य सीमा प्रशुल्क अधिनियम 1962 (1962 का 52) द्वारा यथा निर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और इसमें उक्त अधिनियम की धारा 3, 3 क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत शुल्कों को छोड़कर सीमा प्रशुल्क के सभी शुल्क शामिल हैं।

54. इस अंतिम जांच परिणाम से उत्पन्न केन्द्र सरकार के किसी आदेश के विरुद्ध अपील सीमा प्रशुल्क अधिनियम के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद और सेवा कर अपीलीय प्राधिकरण के समक्ष किया जायेगा।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE & INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF TRADE REMEDIES)

NOTIFICATION

New Delhi the, 24th October, 2018

Final Finding

(Case No – [AC] 02/2018))

Subject: Anti- circumvention investigation concerning the alleged circumvention of anti-dumping duty imposed on the imports of “O-Acid”, originating and exported from China PR.

No. 7/14/2018-DGAD: - Having regard to the Customs Tariff Act 1975, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Rules) thereof;

A. Background of the Case

1. Whereas, Designated Authority, on the request of M/s Aarti Drugs Ltd., conducted an anti-dumping investigation on the imports of Ofloxacin Acid (O-Acid), the Product Under Consideration (PUC), and recommended a provisional Anti-Dumping Duty (ADD) vide notification no 14/31/2016-DGAD, dated 23rd May 2017 which was levied by Ministry of Finance vide Customs Notification 35/2017-Customs (ADD) dated 13th July, 2017. The Designated Authority recommended a definitive ADD vide Notification no. 14/31/2016-DGAD, dated 19th December, 2017. Based on the recommendations, the Ministry of Finance imposed ADD on PUC vide Notification no. 06/2018-Customs (ADD) dated 12th March 2018, for a period of three years from the date of provisional duty.
2. Whereas in the ongoing Anti-Circumvention investigation, regarding imports of Ofloxacin-Ester (O-Ester), claimed to be the penultimate stage for production of O-Acid, M/s Aarti drugs Ltd (herein referred as "petitioner" or "Applicant") filed an application before the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) in accordance with the Section 9A of the Act read with Rule 26(1) Customs Tariff (Identification, Assessment & Collection of Anti-Dumping Duty on the Dumped Articles & for Determination of Injury) Rules, 1995 (AD Rules) for initiation of Anti- Circumvention Investigation concerning imports of O-Ester (hereinafter also referred to as the "Product under Investigation" or "PUI"), a penultimate stage of "Ofloxacin Acid" (hereinafter also referred to as the "O-Acid" or "Product under consideration" or "PUC") originating in or exported from China PR (herein referred as subject country). The petitioner requested for extension of existing anti-dumping duties on the imports of the O-Acid to the PUI, the penultimate stage product of the PUC originating in or exported from the subject country.
3. Whereas, in view of the duly substantiated application filed by the petitioner under Rules 26 (1), the Authority initiated the investigation vide Notification no 7/14/2018-DGAD dated 4th May, 2018 to determine the existence and effect of the alleged circumvention of the ADD levied and to consider recommendation of extension of ADD on imports of O-Acid also to imports of O-Ester.

B. Procedure

4. The procedure described below has been followed with regard to the investigation:
 - i. The Authority issued Recommendations vide Notification no. 7/14/2018-DGAD dated 4th May, 2018 initiating anti-circumvention investigation, which was published in the Gazette of India.
 - ii. The Authority sent copy of the initiation Notification to the Embassy of China in India, known exporters of PUI from China and known importers of PUI in India, as per information available in the petition.
 - iii. The Authority wrote to the exporters/ producers of the PUC/PUI and requested them to file their

responses in the prescribed questionnaire and make their views known in writing within the time limit prescribed. Copies of the letter and questionnaires sent to the exporters were also sent to Embassy of China along with a list of known exporters/ producers, with a request to advise the exporters/ producers from China to respond to the Authority within the prescribed time.

- iv. A copy of the non-confidential version of the application filed by the petitioner was sent to the Chinese producer/ exporters, and Government of China. A copy of the non-confidential version of the application was also made available to the interested parties, on request, through public file.
- v. The Authority forwarded a copy of the public notice initiating the anti- circumvention investigations to the following known producers/ exporters in China and gave them opportunity to make their views known in writing within 40 days from the date of the letter in accordance with the AD Rules:
 - a. Zhejiang Ueasy Business Service Co. Ltd.
 - b. Mercy Group Co. Ltd.
 - c. Zhejiang Chemicals Import and Export Corp
 - d. Zhejiang Medicines and Health Products Import and Export Co. Ltd.
 - e. Apelo Kangyu Business Office
 - f. Zhejiang Jingxin Pharmaceutical Co., Ltd
 - g. Zhejiang East Pharmaceutical Ltd.
 - h. Yongning pharma
 - i. Jiangsu Guotai Int'l Group Huatai Imp. & Exp. Co Ltd
 - j. China Sinopharm International Corporation
 - k. Zhejiang Hengdian Apelo Imp & Exp Co. Ltd
 - l. Jaingxi Chibang Pharmaceutical Co. Ltd
 - m. Jiangxi Dadi Pharmaceutical Limited Liability Co.
 - n. Zhejiang Xingyang Import & Export Co. Ltd
 - o. Yancheng Xinanzhou Pharmaceutical Co, Ltd
 - p. Inner Mongolia Yuanhong Fine Chemical Co., Ltd
 - q. Zhejiang Yuanhong Medical & Chemical Technology Co., Ltd
- vi. None of the producers/ exporters of the PUC/ PUI from China responded to the Authority, nor any producer/ exporter filed response to the questionnaire in the form and manner prescribed.
- vii. However, only an authorization letter was filed by the following exporter
 - a. Zhejiang Ueasy Business Service Co. Ltd.
- viii. Questionnaires were sent to the following known importers/ users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with the Rules:
 - a. Infinity Laboratories Private Limited
 - b. Bharat Chemicals
 - c. Danopharm Chemicals Pvt. Ltd.
 - d. Vital Laboratories Pvt. Ltd.
 - e. M/s. Cipla Limited
 - f. M/s. Macleods Pharmaceuticals Ltd
 - g. M/s. J.B.Chemicals & Pharmaceutical Ltd.
 - h. M/s. Aristo Pharmaceutical Pvt Ltd
 - i. M/s. Sun Pharmaceutical Ind. Limited
 - j. M/s. Medi Pharma Drug House
 - k. M/s. FDC Ltd
 - l. M/s. Medley Pharmaceuticals Ltd

- m. M/s. Cadila Healthcare Ltd
- n. M/s. Merck (India) Ltd
- o. M/s. Alkem Laboratories Ltd
- ix. In response to the initiation of the subject investigation, only M/s Infinity Laboratories Pvt. Ltd., importer of the PUI responded and filed response to the questionnaire.
- x. In accordance with Rule 6(6) of the Anti-dumping Rules, the Authority provided opportunity to the interested parties to present their views orally in a public hearing held on 24th August, 2018. The oral hearing on 24th August, 2018 was attended by the domestic industry and the only responding importer of the PUI. The parties, who presented their views in oral hearing, were requested to file written submissions of the views expressed orally.
- xi. Exporters, importers other domestic producers and other interested parties who have not responded to the Authority nor supplied information relevant to this investigation, have been treated as non-cooperating.
- xii. Details of imports of subject goods for April 2014- March 15, April 2015–March 2016, April 2016–March 2017, the period of investigation July, 2017 - March 2018 and for the first quarter of 2018-19, were obtained from DGCIS.
- xiii. The submissions made by the interested parties during the course of this investigation have been considered by the Authority, wherever found relevant, in this finding.
- xiv. Verification to the extent deemed necessary was carried out in respect of the information & data submitted by the petitioner at the plant premises. Separately, verification also of the manufacturing plant of the cooperating importer was also conducted by the Authority
- xv. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xvi. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has considered such parties as non-cooperative and recorded the findings on the basis of the facts available.
- xvii. In accordance with Rule 16 of the Rules *Supra*, the essential facts were disclosed by the Authority on 25th September, 2018 to the concerned interested parties. Comments were requested by 03rd October, 2018. Comments received on the Disclosure Statement to the extent considered relevant by the Authority have been considered in this Final Finding.
- xviii. *** represents information furnished by an interested party/any other party on a confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- xix. The average exchange rate of 1US\$ = ₹ 65.29 prevailing during the POI has been adopted by the Authority in this finding.

C. Product under Investigation and Like Article

C.1. Views of Exporters, Importers, Consumers and Other Interested Parties

- 5. Following submissions have been made by the other interested party –
 - i. Ofloxacin Ester is completely different product in terms of CAS number, chemical name, chemical composition, weight and formula from O-Acid.
 - ii. Ofloxacin Ester (PUI) and O-Acid (PUC) are two different compounds or chemicals which have different physical and chemical properties/composition, in fact, different category of products as Ofloxacin Ester belongs to Carboxylate Esters group in organic compounds and O-Acid belong to Carboxylic Acid group in organic compounds. Both have different molecular formula and molecular weight. Even Ofloxacin Ester is not soluble in caustic solution whereas O-Acid is freely soluble in it.

C.2. Views of Domestic Industry

- 6. The domestic industry has made the following submissions with regard to the PUI-
 - i. The product forming the object of circumvention is “Ofloxacin Ester (O-Ester)”.
 - ii. The product under investigation in this case is nothing but just the penultimate stage/ form of the PUC in the

original investigation and requires minimal value addition to the tune of 3-4%.for conversion into the PUC.

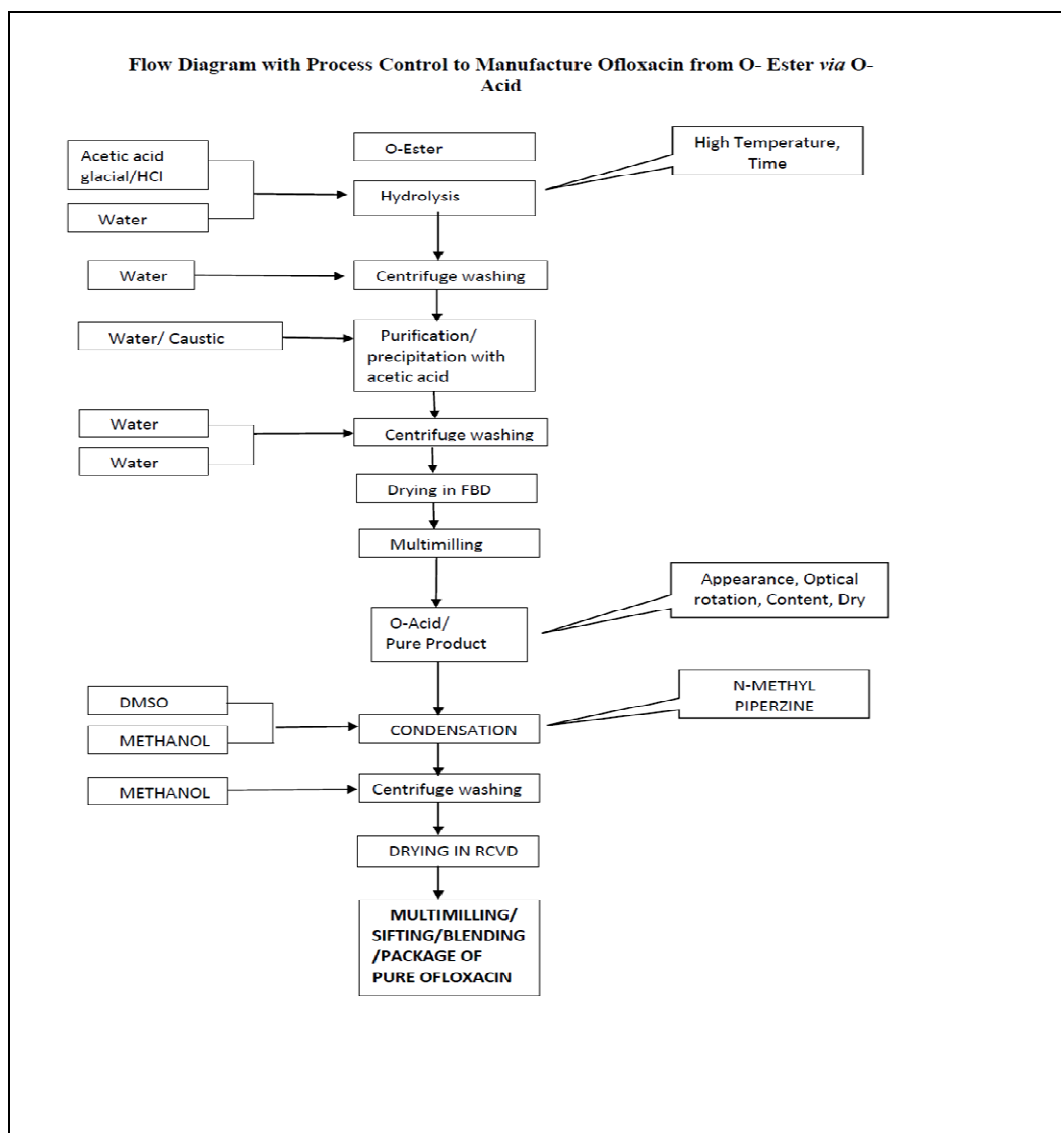
- iii. As regards the claims of value addition, the value addition is to be seen for the product whose duties are being circumvented and not any other product that could be formed from the circumventing product. The value addition required to be seen is on the conversion of O-Ester into O-Acid and not on the conversion of O-Ester into Ofloxacin API.
- iv. The duty is being circumvented through the imports of O-Acid albeit in the form of O-Ester thereby undermining the remedial effects of the anti-dumping duty imposed. The PUI of the present investigation and the PUC of the original investigation belong to the same family.
- v. The subject goods are classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act, 1975 under the Sub-heading 29349900. The customs classification is indicative only and in no way binding on the scope of investigation.
- vi. The production process of producing O-Acid from O-Ester involves the process of hydrolysis in acidic water and the cost of converting O-Ester to O-Acid, i.e., the value addition from the stage of O-Ester to O-Acid in India is much below the limits prescribed under the relevant circumvention provisions.

C.3. Examination of the Authority

7. The product under consideration attracting anti-dumping duty is O-Acid. The product under investigation is “Ofloxacin Ester (O-Ester)” (also referred to as the “Product under investigation” or “PUI” or “subject goods”), which is claimed to be the penultimate stage in the production of “Ofloxacin Acid (O-Acid)” (also referred to as the subject product or the “Product under Consideration” or “PUC”). The product under consideration was examined and recorded by the Authority in the original investigation as follows:

‘The product under consideration in the present petition is O-acid or Ofloxacin acid. It is an off-white to white crystalline powder and is used as an intermediate for the manufacture of Ofloxacin, which is a synthetic chemotherapeutic antibiotic of the fluoroquinolone drug class considered to be a second-generation fluoroquinolone. Ofloxacin is a racemic mixture, which consists of 50% levofloxacin (the biologically active component) and 50% of its “mirror image” or enantiomer dextrofloxacine.

8. Regarding, the contention that O-Ester is a different product from that of O-Acid, the Authority notes that the present investigation is a circumvention investigation, i.e., examination of the alleged circumvention of the antidumping duty already imposed. In such cases, the circumvented product or PUI need not be a like article to the product under consideration. It could actually just be ‘parts or components’ of the PUC or in this case a chemical that is primary to production of the PUC.
9. The production process for Ofloxacin was examined at the premises of both – the DI as well as the responding importer. The process is described in the flow chart given below. It is noted that the process from the stage of O-Ester to O-Acid is an incremental process, the stage that is penultimate to production of Ofloxacin. It is seen that O-Ester is hydrolysed in acidic water, which is then cooled and filtered to form dried cakes of O-Acid, which are then further processed to obtain Ofloxacin.



10. The PUI is described as “Ofloxacin Ester” or by its chemical name “9,10-Difluoro-3-Methyl-7-Oxo-2,3-Dihydro-7H-Pyrido (1,2,3-De) 1,4-Benzoxazine-6-Carboxylic Ester” and it is classified under Chapter 29 and subheading 29349900 of the Customs Tariff Act, 1975. The Customs classification is indicative only and in no way binding upon the scope of the investigation.

D. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING

D.1. Views of Exporters, Importers, Consumers and Other Interested Parties

11. Views of other interested parties with regard to domestic industry are as follows:

- i. Aarti Drugs Ltd. is producing the subject goods for manufacturing Ofloxacin and not for sale in the domestic market. Aarti Drugs Ltd. has built installed capacity for O-Acid dedicated to cater the need of their own Ofloxacin plant and thus cannot constitute domestic industry in terms of AD Rules.

D.2. Views of domestic industry

12. Following submissions have been made by the domestic industry –

- i. The petition has been filed by M/s Aarti Drugs Ltd. The petitioner company is the sole producer of the PUC in the country.
- ii. The Petitioner Company has neither imported in the period of investigation nor is related to any exporter/ producers of subject goods in subject countries or importers in India. However, the petitioner did import the PUC in the injury investigation since the landed price of the PUC was much below the cost of production and so it was not feasible to produce the same because of presence of dumped imports. Since the imposition of the provisional duty and then the definitive anti-dumping duty on the imports of PUC, the petitioner has not imported the PUC into the country.

- iii. The petitioner is the sole producer of the subject goods in India and constitutes “domestic industry” within the meaning of the Anti-Dumping Rules.
- iv. Petitioner has set up capacity far in excess of Ofloxacin. Thus, clearly the intention of the petitioner is also in the merchant market. The petitioner did not sell goods in domestic market, not out of unwillingness but because of compulsion. Availability of low priced imports of O-Acid earlier and now O-Ester has made it difficult for the producer to sell goods.

D.3. Examination of the Authority

13. The Authority notes that the petition for anti-circumvention investigation and extension of existing ADD on imports of O-Acid to the imports of O-Ester is filed by M/s Aarti Drugs Ltd as per Rule 26(1) which reads as under;

“(1) Except as provided herein below, the designated authority may initiate an investigation to determine the existence and effect of any alleged circumvention of the anti-dumping duty levied under section 9A of the Act, upon receipt of a written application by or on behalf of the domestic industry.”

14. M/s Aarti Drugs Ltd. were considered as the Domestic Industry as per Rule 2(b) in the original investigation on the basis of which ADD on PUC has been recommended and then imposed on notified on 12 March, 2018. Rule 2(b) of the Anti-Dumping Rules defines domestic industry as under: -

“domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers.”

15. The petitioner is not related (either directly or indirectly) to any exporter of O-Ester or O-Acid in China or an importer in India. The Authority notes that the petitioner has not imported the PUC from China during period of investigation.
16. It is not in dispute that production of petitioner constitutes a major proportion in the Indian production. The importer has however disputed eligibility of the petitioner to claim status of domestic industry within the meaning of Rule 2(b) on the grounds that the petitioner is a captive producer. The Authority had considered this aspect in the original investigation and concluded as follows:

The interested parties have contended that the applicant has set up facilities only for captive consumption and the Authority has held in the past that captive consumption is not required to be considered for determination of standing of a domestic producer under Rule 5. The Authority notes that (a) the capacities created by the company for Ofloxacin Acid are much higher than its own requirement, (b) such capacities are quite comparable to the demand for the product in the Indian market, (c) the applicant has stated that after commencing production, they offered the product for sale through email communications and public advertisements in Chemical Weekly, thereby, it can be inferred that the DI had set up plant for captive as well as merchant sales. The present investigation is a case where the Authority is investigating whether dumping of the product is materially retarding establishment of domestic industry in the Country in addition to causing injury to the present capacities. In view thereof, the Authority holds that the fact of absence of actual merchant sales up to POI should not deprive the company from being treated as domestic industry under Rule 2(b).

17. The Authority notes that Rule 26 (1) requires an Anti-Circumvention petition to be filed by the Domestic Industry of the ADD already levied. In this investigation, the Domestic Industry of the existing ADD comprised of M/s Aarti Drugs Ltd. as stated above. The petitioner has still not been able to sell good in the merchant market in view of imports of O-Acid being almost replaced by imports of O-Ester. In view of this the Authority is of the opinion that the standing of petitioner and its eligibility as domestic industry of PUC as required under Rule 26(1) is not compromised.

E. Evidence of Circumvention

E.1 Submissions by Exporters, Importers and Other Interested Parties

18. Submissions made by the interested parties with regard to evidence of circumvention is as follows:
 - i. In the process of manufacturing of Ofloxacin from O-Ester, production of O-Acid is not captured/ reported and Infinity Labs does not account for the production of O-Acid. Infinity does not produce O-Acid for commercial sales. Value addition to produce Ofloxacin from O-Ester is more than 35%.
 - ii. There is around 10% difference in molecular weight, however, around 17-18% value addition is done due to yield difference after manufacturing. After adding all the expenses, the value addition goes up by around 30-35%. Moreover, O-Ester is an impurity in O-Acid and it should be absent in O-Acid or limited to maximum

0.5% thereby confirming that it is backward integration and not circumvention.

- iii. The difference of prices of producing O-Ester supplied by Chinese suppliers versus O-Acid is only 10-15%, however, actual manufacturing difference is more than 30-35%.
- iv. Even the clause of 35% value addition is not applicable here in chemical reactions. As reactions depend upon one compound to other manufacture compound and in some cases when two compounds join together in condensation reaction, the resultant compound is large showing huge value addition whereas if the reaction is acidic hydrolysis or hydrogenation or reduction or oxidation than the molecular weight of the resultant compound is almost same and there is not much value addition even though the resultant compounds are totally different with different category and different chemical and physical properties.

E.2. Submissions by Domestic Industry

19. Following submissions have been made by the domestic industry with regard to circumvention which are as follows-
 - i. Exports of the intermediate product, O-Ester started and increased after the imposition of provisional anti-dumping duties on O-Acid and the same has intensified.
 - ii. Because of the imposition of ADD, the producers from China have found it advantageous to export O-Ester, a penultimate intermediary product and dump the same into India.
 - iii. There is a change in the pattern of trade. The volume of imports from subject country has shifted from O-Acid from O-Ester. Whereas imports of O-Ester have increased significantly, the imports of O-Acid have declined and are now non-existent.
 - iv. The significant increase in imports of O-Ester post imposition of provisional duties supports the contention that O-Ester is being exported from China to circumvent the ADD earlier imposed on DFS.
 - v. There is change in chemical and physical nature of product, there is no circumvention at all rather it is backward integration in the process of manufacturing Ofloxacin.

E.3. Examination of the Authority

20. The Authority has examined the aforesaid submissions and alleged circumvention phenomena under relevant Act/ Rules i.e. section 9 A (1) of the Customs Tariff Act, 1975 and Rule 25 of the AD Rules which state as follows—

“Section 9A(1A) of the Customs Tariff Act Where the Central Government, on such inquiry as it may consider necessary, is of the opinion that circumvention of anti-dumping duty imposed under sub-section (1) has taken place, either by altering the description or name or composition of the article subject to such anti-dumping duty or by import of such article in an unassembled or disassembled form or by changing the country of its origin or export or in any other manner, whereby the anti-dumping duty so imposed is rendered ineffective, it may extend the anti-dumping duty to such article or an article originating in or exported from such country, as the case may be.”

21. Rule 25 of AD Rules relates to Circumvention of anti-dumping duty. This states as under –

(1) Where an article subject to anti-dumping duty is imported into India from any country including the country of origin or country of export notified for the purposes of levy of anti-dumping duty, in an unassembled, unfinished or incomplete form and is assembled, finished or completed in India or in such country, such assembly, finishing or completion shall be considered to circumvent the anti-dumping duty in force if,

(a) the operation started or increased after, or just prior to, the anti-dumping investigations and the parts and components are imported from the country of origin or country of export notified for purposes of levy of anti-dumping duty; and

(b) the value consequent to assembly, finishing or completion operation is less than thirty-five percent of the cost of assembled, finished or complete article.

Explanation I. – ‘Value’ means the cost of assembled, complete or finished article less value of imported parts or components

Explanation II. - For the purposes of calculating the ‘value’, expenses on account of payments relating to intellectual property rights, royalty, technical know-how fees and consultancy charges, shall not be taken into account.

(2)....

(3)

Explanation. - For the purposes of this sub-rule, it shall be established that there has been a change in trade practice, pattern of trade or channels of sales if the following conditions are satisfied, namely: -

(a) absence of a justification, economic or otherwise, other than imposition of anti-dumping duty;

(b) evidence that the remedial effects of the anti-dumping duties are undermined in terms of the price and or the quality of like products.

22. The Authority notes that Rule 25(1)(a) requires to establish the onset or increase in phenomena of circumvention and further the Rule 25(1)(b) requires to establish that 'value addition' associated with the said phenomena is in accordance with the stipulated threshold in this sub Rule.
23. Regarding the claim that the domestic importer is not circumventing the anti-dumping duty, but instead is involved in the process of backward integration of the production of Ofloxacin, the Authority is of the opinion that backward integration by setting up additional manufacturing plants/ equipment has to be seen in the context of how far back is the integration process going and what is the actual value added in the process. This is adequately captured in the extant rules that require a value addition of at least 35% being achieved. In this case too examination of the value addition achieved is a critical factor.

F. SHIFT IN TRADE PATTERN

24. The Authority notes that provisional ADD was earlier imposed on imports of the PUC from the subject country vide notification no. 35/2017-Customs (ADD) dated 13th July, 2017. Definitive duties were imposed vide Notification no. 06/2018-Customs (ADD) dated 12th March 2018. The duties so imposed are in force. The Authority has to examine the onset and enhancement of phenomena of circumvention of existing ADD just after the imposition of the provisional ADD i.e. from July 2017. The Authority also has examined whether there is change in pattern of trade and whether this change has stemmed from a practice, process or work for which there was insufficient due cause or economic justification other than the imposition of duty. The table below depicts the trade pattern.

		Imports			
		O-Acid		O-Ester	
		Volume	Value	Volume	Value
		MT	Rs Lacs	MT	Rs Lacs
a)	Annual				
	2015-16	602	14,084	-	-
	2016-17	456	8,642	-	-
	2017-18	134	2,169	305	4,212
b)	Monthly				
1	15-Apr	47	1,214	-	-
2	15-May	63	1,559	-	-
3	15-Jun	91	2,184	-	-
4	15-Jul	95	2,240	-	-
5	15-Aug	56	1,308	-	-
6	15-Sep	86	2,014	-	-
7	15-Oct	24	583	-	-
8	15-Nov	12	271	-	-
9	15-Dec	7	212	-	-
10	16-Jan	21	453	-	-
11	16-Feb	60	1,240	-	-
12	16-Mar	40	806	-	-
13	16-Apr	20	500	-	-
14	16-May	67	1,355	-	-
15	16-Jun	47	999	-	-
16	16-Jul	75	1,467	-	-

		Imports			
		O-Acid		O-Ester	
		Volume	Value	Volume	Value
		MT	Rs Lacs	MT	Rs Lacs
17	16-Aug	16	303	-	-
18	16-Sep	11	205	-	-
19	16-Oct	41	760	-	-
20	16-Nov	32	568	-	-
21	16-Dec	28	497	-	-
22	17-Jan	64	1,073	-	-
23	17-Feb	40	643	-	-
24	17-Mar	17	272	-	-
25	17-Apr	24	372	-	-
26	17-May	42	645	-	-
27	17-Jun	55	921	-	-
28	17-Jul	-	-	24	325
29	17-Aug	12	206	64	843
30	17-Sep	-	-	56	738
31	17-Oct	-	-	16	214
32	17-Nov	-	-	25	326
33	17-Dec	-	-	-	-
34	18-Jan	-	-	40	563
35	18-Feb	1	25	32	475
36	18-Mar	-	-	48	730
37	18-Apr			16	232
38	18-May			40	604
39	18-Jun			16	246

25. It is noted that the volume of imports of O-Acid from China declined post imposition of the provisional ADD since July 2017 whereas imports of O-Ester from China started since then. It is thus seen that whereas imports of O-Acid declined and have become non-existent, the imports of O-Ester increased since the imposition of provisional ADD. Shift in imports from O-Acid to O-Ester since the imposition of the provisional duty establish the shift in the pattern of trade.

F.1 VALUE ADDITION BELOW 35% OF THE COST OF ASSEMBLY, FINISHING OF COMPLETE ARTICLE

26. The Rule 25(1)(b) of AD Rules requires that “*value consequent to assembly, finishing or completion operation is less than thirty-five percent of the cost of assembled, finished or complete article*”. Authority notes that none of the producers/exporters from China has responded. Further, the importer who has responded has converted the subject goods into the ultimate downstream product. The Authority therefore, in accordance with provisions of para 6(8), has considered the cost of production data of M/s Aarti Drugs Ltd. for the purpose of evaluating value addition from O-Ester to O-Acid during the POI.
27. The value addition from O-Ester (PUI) to O-Acid (PUC) evaluated as per Rule 25 (1) (b) is depicted in Table below:

Particulars		Conversion Factor	Rs/MT	Rs/MT
Raw material cost O-Ester			***	
Conversion Cost	Up to O-Ester stage		***	
	Ester to O-Acid			
	Total Cost up to O-Ester			***
	O-Ester for O-Acid	1.11		***
	Raw Material and Conversion cost for O-Acid		***	
	Cost of O-Acid			***

Particulars	UOM	Price
Value Addition	Rs/MT	***
Cost of O-Acid	Rs/MT	***
Value Addition	%	***
Value Addition	Range %	0 -10

28. The landed value of PUC derived from the imported PUI, i.e. after adjusting the landed value of PUI with value addition is lower than the landed value of PUC including existing ADD when imported directly in finished-form from China.
29. As regards the contention that there is significant value addition from the stage of O-Ester to Ofloxacin, the downstream product, it is noted that the investigation concerns production of O Ester to O-Acid.
30. The Authority has examined the coincidence between the 'change in pattern of trade' and imposition of the ADD on the PUC by conducting a cost benefit analysis and other economic benefits/ cost savings from the production and exports of O-Ester instead of O-Acid. It is noted that there was no market or requirement for O-Ester prior to imposition of antidumping duty on O-Acid. Imposition of Antidumping duty on O-Acid led to commencement of O-Ester imports.
31. The Authority has considered the value addition involved in the process of producing O-Acid from O-Ester. The value addition involved in producing O-Acid from O-Ester is determined to be much below the limits prescribed under the law. Production of O-Ester is only a step before the production of O-Acid in the manufacturing process for Ofloxacin. O-Ester is hydrolysed in acidic water to yield O-Acid. Because of the imposition of ADD on O-Acid, the producers in China have found it advantageous to stop at O-Ester, the unfinished/pennultimate stage of O-Acid, and export the same into India. The investigation has thus shown that there exists no economic justification other than the incentive to avoid the ADD on O-Acid for export of O-Ester to India.

G. DUMPING OF PUI AND UNDERMINING THE REMEDIAL EFFECT OF THE ANTI-DUMPING DUTY

G.1 Submissions by Exporters, Importers and Other Interested Parties

32. Following submissions have been made by other interested parties with regard to injury are as follows-
- Infinity does not maintain books of accounts for O-Acid production or sale thus, domestic industry not being affected in any way. Production of Ofloxacin from O-Ester is costly and in terms of manpower, electricity, power, fuel, etc.
 - Since petitioner is not competing for sale of O-Acid in open market, thus, imports of O-Ester (main raw material used in production of O-Acid) cannot cause injury to petitioner.
 - Aarti Drugs not fulfilling domestic demand of O-Acid as they have not made any sales. Thus, injury caused due to other factors.

G.2. Submissions by Domestic Industry

33. Following submissions have been made by the domestic industry with regard to injury are as follows-

- i. O-Ester is being imported into India instead of O-Acid and being converted into O-Acid/ Ofloxacin for further use. This has rendered the duty on O-Acid as ineffective. The Imports have shifted from O-Acid to O-Ester since the imposition of the provisional duties.
- ii. There is a significant change in the pattern of trade with reference to prices and quantity of the product and the same is undermining the remedial effects of ADD earlier imposed on imports of O-Acid.
- iii. The imports of O-ester have directly resulted into absence of merchant market for the domestic industry despite the imposition of anti-dumping duties. This has rendered the existing duties redundant as the imposition of ADD was supposed to enable fair play in the market but the same has not happened.
- iv. The landed value of the PUC derived from the prices of the PUI is much below the landed prices of the imported PUC even with the ADD. In fact, the landed value of the PUC derived from the PUI is much below the levels of PUC being imported prior to the imposition of the duty. This has rendered the duty ineffective.
- v. The derived PUC is undercutting the notional selling prices of the PUC by a significant margin.

G.3. Examination of the Authority

34. The Authority notes that Rule 26(4) requires establishing that the article circumventing the existing ADD is dumped in India as a primary condition. Further Rule 26(5) states that evidence/ procedural requirements of Rule 6 shall apply *mutatis mutandis* to the investigation carried out under this Rule.
35. The Authority notes that none of the producers/exporters have filed Questionnaire Response.
36. Rule 6 (8) provides that “*In a case where an interested party refuses access to, or otherwise does not provide necessary information within a reasonable period, or significantly impedes the investigation, the designated authority may record its findings on the basis of the facts available to it and make such recommendations to the Central Government as it deems fit under such circumstances*”.
37. The Authority notes that while the Petitioner has submitted that China PR be treated as a Non-Market Economy, since in the instant case none of the producers/ exporters has responded, and Rule 6(8) needs to be resorted to the examination of issues raised on market situation by the petitioner is not required.
38. The Authority resorting to Rule 6(8) has constructed the normal value for the PUI i.e. O-Ester, by considering the normal value for O-Ester earlier established at the time of original investigations, and duly adjusted for the value addition from O-Ester to O-Acid. The normal value has also been adjusted for the differences in the raw materials cost during the two periods.
39. For the purpose of evaluating ex-factory export price of PUI in POI, DGCIS data has been adopted. The weighted average ‘CIF’ price of PUI during POI has been considered as 1383 Rs/Kg. Adjustments on account of Marine Insurance, Commission, Port Expenses, Bank Charges and Inland Freight Expenses have been considered to an extent of 6.92 Rs/Kg, of CIF, 1% of FOB, 0.5 % of FOB, 0.5% of FOB and 0.5% of FOB respectively on the basis of data provided by the Petitioner and Authority’s past consistent practice on norms related to such adjustments. The Table below depicts the dumping margin.

Computation of Dumping Margin

Particulars	Rs/MT
Constructed Normal Value O-Ester	***
Net Export Price	***
Dumping Margin	***
Dumping Margin %	***
Dumping Margin (Range %)	20-30%

40. The dumping margin is proposed to be considered as *** \$/MT, which is significant and above *de minimus* limits under the AD Rules.
41. Thus, the shift in trade pattern, value addition being lower than prescribed threshold and continuation of dumping are collectively established to be present in this case.

H. UNDERMINING REMEDIAL EFFECT OF ADD EXISTING ON PUC BY CIRCUMVENTION

42. Explanation to Rule 25 provides as follows:

Explanation. - For the purposes of this sub-rule, it shall be established that there has been a change in trade practice, pattern of trade or channels of sales if the following conditions are satisfied, namely: -

- (a) *absence of a justification, economic or otherwise, other than imposition of anti-dumping duty;*
 (b) *evidence that the remedial effects of the anti-dumping duties are undermined in terms of the price and or the quality of like products.*

H.1 Volume Effect

H.1.1 Complete Shift from O-Acid (PUC) to O-Ester (PUI)

43. The Authority has considered the transaction-wise import data procured from DGCI&S for the assessment of volume and value of imports of both PUC & PUI from the subject country. Whereas the imports of O-Ester have increased significantly post the imposition of the provisional duty since July 2017, imports of O-Acid have declined and are non-existent. Thus, the imports of O-Acid (PUC) has been almost replaced by O-Ester (PUI).

Year/ Period	Imports			
	O-Acid		O-Ester	
	Volume	Value	Volume	Value
	MT	Rs Lacs	MT	Rs Lacs
2015-16	602	14,084	-	-
2016-17	456	8,642	-	-
2017-18	134	2,169	305	4,212
2018-19 (Apr – Jun)	-	-	72	1,083

44. The Authority finds that the import of O-Acid from China PR has declined post imposition of provisional ADD. However, imports of PUI, O-Ester started and have increased post imposition of provisional ADD on O-Acid.

H.1.2 Inability to Garner Market Share

45. It was noted in the original investigation that the domestic industry despite being a sole producer claimed to be making all efforts required, but was unable to make merchant sales.

H.2 Price Effect

46. The impact of imports of O-Ester on the prices of the domestic industry has been examined with reference to price undercutting. For the purpose of this analysis, a comparison of the landed price of imports for PUI from subject country during the period of investigation, after appropriate adjustment in order to derive price of O-Acid was made with the selling price for O-Acid of the domestic industry in the domestic market. While undertaking this analysis, in the absence of the merchant market for the domestic industry, the Authority has considered the net selling price of the domestic industry on a notional basis after considering all due adjustments to ensure a fair and an undistorted comparison. The expenses incurred in India in converting O-Ester to O-Acid have been added on the basis of value addition determined by the Authority. Thus, the landed price of imports of O-Ester was adjusted upward by the amount of value addition and thereafter compared with the selling price of the domestic industry. The comparison has shown that the adjusted landed price of imports of O-Ester is significantly below the notional selling price of O-Acid by the domestic industry. Thus, the imports of O-Ester are resulting in price undercutting and are thus having an adverse price effect. This has eroded the efficacy of the ADD imposed on the PUC. Also the computed price of O-Acid from O-Ester during the injury period showed to be much below the landed price of the imports of O-Acid.

47. The table below illustrates the extent of circumvention:

Particulars	UOM	POI
Landed Price of O-Ester	Rs/MT	1,490
Value Addition	%	***
Value Addition	Rs/MT	***
Landed Value of O-Acid (Derived)	Rs/MT	***

Landed Price of O-Acid (Actual)	Rs/MT	***
Landed Value of O-Acid with ADD	Rs/MT	***

Particulars	UOM	Value
Landed value of O-Acid	Rs /kg	1,544
Net Sales Realization of O-Acid	Rs /kg	***
Price undercutting	Rs /kg	***
Price undercutting	%	***
Price undercutting	Range %	10-20

I. POST DISCLOSURE COMMENTS

I.1 Views of the Domestic Industry

48. Post disclosure submissions made by the domestic industry are as follows:

- i. Ofloxacin Ester or “9,10-Difluoro-3-Methyl-7-Oxo-2,3-Dihydro-7H-Pyrido (1,2,3-De)1,4-Benzoxazine-6-Carboxylic Ester” is classified under Chapter 29 and subheading 29349900 of the Customs Tariff Act, 1975. The Customs classification is indicative only and in no way binding upon the scope of the investigation.
- ii. O-Acid is first produced in the form of O-Ester (product under investigation), which is only the penultimate stage in the production of O-Acid. Instead of undertaking full production process for O-Acid, the Chinese producers are stopping at Ester and exporting to India. The Indian consumers, who requires O-Acid for production of Ofloxacin, starts from Ester stage, as Ester has all the essential properties of Acid and processes the same into Ofloxacin. Hence, the subject goods, O-Acid, continue to be exported to India, albeit in penultimate form and in different name.
- iii. The process involved from the stage of O-Ester is only hydrolysis and is only an incremental process. O-Ester is first hydrolysed in acidic water (such that it obtains acidic properties) to obtain O-Acid. In case if the PUI is to be directly used in production of Ofloxacin, it can be used only after isolation of solid O-Acid but without drying. However, if the same is to be sold in the merchant market for further production into Ofloxacin, it is cooled, filtered and dried, so that cakes of O-Acid are formed and the same are made available in the merchant market.
- iv. The value addition involved in processing O-Ester to O-Acid is only about 3.49% which is minimal and much below the limits as prescribed under law. It has no other use except for further processing/ conversion into O-Acid and hence has no market other than being used for producing O Acid. The landed value of PUC derived from the imported PUI, i.e. after adjusting the landed value of PUI for the value addition is lower than the landed value of PUC including existing ADD when imported directly in finished-form from China.
- v. There has been a change in the pattern of trade since the imposition of the provisional duty. The imports of O-Acid have been replaced by the imports O-Ester. The exports of unfinished form of O-Acid in the form of O-Ester started immediately after imposition of provisional antidumping duties in July of 2017. Prior to the imposition of the provisional duties, imports of O-Ester were non-existent. After imposition of duties, imports of O-Ester increased and that of O-Acid has almost stopped. Imports of O-Ester in India were non-existent prior to imposition of the provisional duty on the imports of O-Acid.
- vi. The circumvented product i.e. O-Acid in the form of O-Ester is entering the Indian market at dumped prices and thereby rendering the existing duties ineffective.
- vii. First, because of dumping of O-Acid in the country and then now dumping of O-Ester in the country, the domestic industry has not been able to sell O-Acid in the market and is facing significant plant underutilisation. Despite making several public offers to sell O-Acid in the market, the petitioner has not been able to do so, as a result of continued dumping of O-Acid, albeit in different forms.
- viii. A comparison of the derived cost of O-Acid from the landed value of O-Ester after considering due adjustments for conversion into O-Ester made with the notional selling price of O-Acid produced by the domestic industry, reveals that the adjusted landed price of imports of O-Ester is significantly below the notional selling price of O-Acid by the domestic industry. The imports of O-Ester are resulting in price undercutting and are having an adverse price effect. The same is leading to erosion of the efficacy of the ADD imposed on the PUC. Even, the computed price of O-Acid from O-Ester during the injury period showed to be much below the landed price of the imports of O-Acid.

- ix. The landed value of O-Acid as considered by the Designated Authority in the anti-dumping investigation was around Rs 2,358 per kg. However, the landed value of O-Ester in the present POI declined to Rs 1,490 per kg. Even after considering value addition, the landed value in terms of O-Acid comes to Rs 1542/kg which shows that the import price of O-Ester is much lower than that of O-Acid.

I.2 Views of the other Interested Parties

49. Post disclosure submissions made by other interested parties are as follows:

- i. The petitioner is only producing the subject goods for manufacturing Ofloxacin and not for sale in the domestic market. The petitioner has not made any sales in the domestic market and is only present as a captive consumer of the goods and not as a domestic seller. The petitioner cannot be treated as domestic industry because it is only a captive consumer and not a domestic seller and so does not meet the criteria of being called as domestic industry.
- ii. The petitioner has made unrealistic offers to sell O-Acid. An exorbitant rate of Rs 2500/- with the condition of advance payment and delivery after four weeks is unreasonable. At such a price, Ofloxacin, the finished product, will become uncompetitive in the market and the same should be compared with the price quoted by Aarti for Ofloxacin and with the import price of Ofloxacin with basic customs duty and anti-dumping duty. With such a high price, the cost of manufacturing Ofloxacin should also be considered as it requires value addition of Rs 300/-
- iii. Infinity has done backward integration and does not account for any production of O-Acid as it consumes the same captively. It produces ofloxacin directly from O-Ester and not from O-Acid. The value addition from the conversion of O-Ester to Ofloxacin is more than 35%.
- iv. The normal value of O-Ester was never established before at the time of the original investigations as the original investigation was in context of O-Acid and not O-Ester.
- v. No data depicting the undermining of remedial effects was provided by the domestic industry till date. The domestic industry be asked to provide at least indexed numbers in non-confidential version to substantiate how imports of product under investigation are causing injury. In the absence of the same, undermining of remedial effects cannot be examined.
- vi. In the absence of any imports of O-Acid in the period of investigation, how can the landed price of O-Acid be determined. When no merchant sales have been made then how can the selling price of the domestic industry be determined. In the absence of any price data undermining of remedial effects cannot be examined.

I.3 Examination of the Authority

50. The issues raised in the post disclosure submissions received from the interested parties have largely been raised earlier during the investigation and also addressed appropriately. However, for the sake of clarity the submissions by the interested parties are being examined as below:

- i. As regards the claims on the petitioner not producing goods for the merchant market and using them only for captive consumption, the Authority notes that the issues relating to the standing of the domestic industry has been discussed at various stages of not just this investigation but also during the investigation resulting in imposition of the ADD on import of O-Acid from China. There is little to add other than to note that the DI as determined in the earlier investigation is the same as that in this case. The Authority would like to point out that in an anti-circumvention investigation the primary focus of the Authority is whether an ADD already imposed is being circumvented or not.
- ii. As regards the issue of computation of normal value it is clarified that the Authority has resorted to Rule 6(8) and has constructed the normal value for the PUI i.e. O-Ester, by considering the normal value determined for O-Acid earlier established at the time of original investigations, and duly adjusted for the value addition from O-Ester to O-Acid. The normal value has also been adjusted for the differences in the raw materials cost during the two periods.
- iii. As regards the argument that the interested party does not produce O-Acid and directly uses O-Ester to produce Ofloxacin, it is noted that, verification at the premises of the domestic industry as well as the responding importer and the evidence placed on record, shows that the process of converting O-Ester into Ofloxacin cannot be undertaken without the conversion of O-Ester first into O-Acid.
- iv. It is also noted that this being a circumvention investigation the aspect of value addition is to be seen from the circumventing product to the circumvented product. In view of the same it is considered that the value addition is required to be seen from the conversion of O-Ester into O-Acid and not of O-Ester into Ofloxacin. Such value addition is much below the threshold limits as prescribed under the law.

- v. As regards the argument that because of lack of merchant sales, selling price cannot be determined, the Authority recalls that even at the time of original investigations, the undercutting was calculated by comparing the landed value of O-Acid with the sale price, which is taken as the transfer price of O-Acid to Ofloxacin plant. The Authority considered this transfer price as the optimum price. Thus the Authority has considered the net selling price of the domestic industry on a notional basis after considering all due adjustments to ensure a fair and an undistorted comparison.

J. CONCLUSION

51. Having examined the contentions of the Domestic Industry and various interested parties and on the basis of the analysis as above, the Authority concludes that
- i. The anti-dumping duty imposed on imports of O- Acid, originating and exported from China PR vide Customs Notification No. 6/2018-Customs (ADD) dated 12th March, 2018 was circumvented through exports of O-Ester from China PR in accordance with Rule 25 (3) of the AD Rules. The imports of O-Ester in India constitute circumvention of ADD earlier imposed on imports of O-Acid.
 - ii. O- Ester has been exported at dumped prices during the POI.
 - iii. O- Ester exports from China has undermined the existing AD measure on imports of O-Acid originating in or exported from China PR vide Customs Notification No. 6/2018-Customs (ADD) dated 12th March, 2018.

K. RECOMMENDATION

52. The Authority, keeping in view the aforesaid, recommends extension of the existing Anti-Dumping Duty on “O-Acid”, originating and exported from China PR and imposed vide Customs Notification No. 6/2018-Customs (ADD) dated 12th March, 2018 to import originating and exported from China PR of “Ofloxacin Ester” or “9, 10-Difluoro -3- Methyl-7-Oxo-2, 3-Dihydro-7H-Pyrido (1,2,3-De) 1, 4-Benzoxazine-6-Carboxylic Ester”, classified under HS subheading 29349900. The duty amount is to be arrived at on the same basis as notified in the said Customs Notification. The AD Duty will be applicable from the date of its notification by the Ministry of Finance and the validity of AD Duty would be co-terminus with the duty on O-Acid as levied through Custom Notification No. 6/2018-Customs (ADD) dated 12th March, 2018.
53. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.
54. An appeal against the order of the Central Government arising out of this final finding shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

SUNIL KUMAR, Addl. Secy. & Designated Authority.